

## गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं

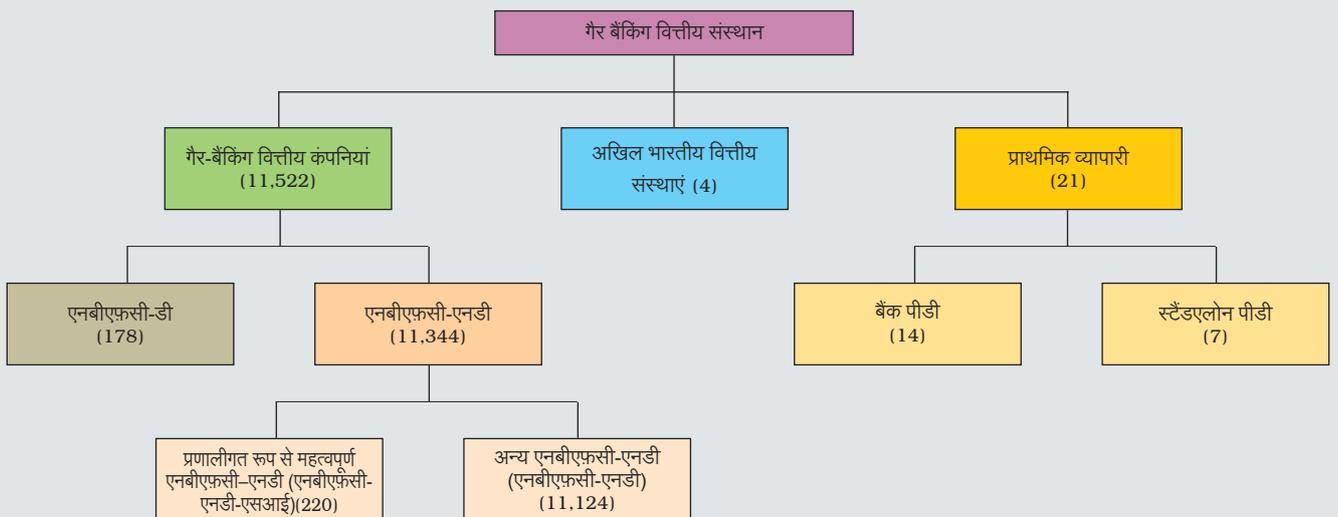
भारत के बैंक-प्रधान वित्तीय क्षेत्र में गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं (एनबीएफआई) वाणिज्य जगत हेतु वित्तीयन के एक महत्वपूर्ण वैकल्पिक माध्यम हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करने में उनकी भूमिका और छोटे व्यापारों एवं विशिष्ट क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने से उनकी प्रासंगिकता को एक अतिरिक्त आयाम प्राप्त हो जाता है। गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को अभिशासित करने से संबंधित विनियमनों को बैंक-विनियमनों के साथ उत्तरोत्तर सुसंगत बनाया जा रहा है ताकि विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते समय वित्तीय स्थिरता हेतु सही संतुलन बनाया जा सके।

### I. परिचय

VII.1 वाणिज्य क्षेत्र को होने वाले संसाधनों के प्रवाह में गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थानों द्वारा की जाने वाली मध्यस्थता का हिस्सा उत्तरोत्तर बढ़ता गया है। रिज़र्व बैंक द्वारा विनियमित एनबीएफआई के तहत अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाएं (एआईएफआई), गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी) और प्राथमिक डीलर (पीडी) आते हैं (चार्ट VII.1)। भारत में विकास आयोजना के व्यापक परिणाम के रूप में शीर्षस्थ लोक-प्रतिष्ठानों के तौर पर एआईएफआई का गठन किया गया, ताकि विशिष्ट क्षेत्रों को दीर्घावधिक वित्त/पुनर्वित्त प्रदान किया जा सके। दूसरी ओर, एनबीएफसी अधिकतर निजी क्षेत्र की संस्थाएं

हैं जो कि विशिष्ट क्षेत्रों को विविध प्रकार की वित्तीय सेवाएं और उनकी ऋण आवश्यकताओं, जिनमें अन्य के साथ-साथ, भौतिक आस्तियों का वित्तपोषण, वाणिज्यिक वाहन और अवसंरचना ऋण शामिल हैं, को पूरा करने में महारथ रखती हैं। प्राथमिक डीलरों (पीडी) का प्रादुर्भाव 1995 में हुआ, ये सरकारी प्रतिभूतियों हेतु प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के बाजारों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। तुलन-पत्र के संदर्भ में, एनबीएफआई की कुल आस्तियों का लगभग 23 प्रतिशत एआईएफआई हैं जबकि एनबीएफसी 76 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती हैं और एकल पीडी इसका 1 प्रतिशत भाग निरूपित करते हैं।

चार्ट VII.1: भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा विनियमित गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं



टिप्पणी: कोष्ठकों में आंकड़े संस्थानों की संख्या हैं।

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक।

VII.2 इस पृष्ठभूमि में, यह अध्याय 2016-17 में प्रत्येक एनबीएफआई के वित्तीय निष्पादन का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्याय सात भागों में निरूपित है। भाग 2 एनबीएफसी सेक्टर - जमाराशि ग्रहण करने वाली एनबीएफसी (एनबीएफसी-डी) और जमाराशि ग्रहण न करने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी (एनबीएफसी-एनडी-एसआई) - दोनों की समग्र स्थिति प्रदर्शित करता है। भाग 3 भुगतान बैंकों (विभेदीकृत बैंकों का एक नवीन स्वरूप) के वित्तीय निष्पादन पर चर्चा करता है। एआईएफआई की वित्तीय स्थिति का विश्लेषण भाग 4 में किया गया है, जिसके बाद भाग 5 में प्राथमिक डीलरों की भूमिका का मूल्यांकन किया गया है। भाग 6 में नवीनतम गतिविधियां दी गई हैं और भाग 7 में समग्र आकलन के साथ समापन प्रस्तुत किया गया है।

## II. गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां

VII.3 एनबीएफसी को उनकी देयता संरचनाओं, उनके द्वारा निष्पादित गतिविधियों और उनकी प्रणालीगत महत्वपूर्णता के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। देयता संरचना के संदर्भ में एनबीएफसी को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है- जमा-राशि ग्रहण करने वाली एनबीएफसी या एनबीएफसी-डी जो जनता से जमाराशियां स्वीकार करती हैं और उसे धारित करती हैं एवं जमा-राशि न ग्रहण करने वाली एनबीएफसी या एनबीएफसी-एनडी, जो जनता से जमाराशियां स्वीकार नहीं करती हैं। एनबीएफसी-एनडी के बीच जिनका आस्ति आकार ₹5 बिलियन

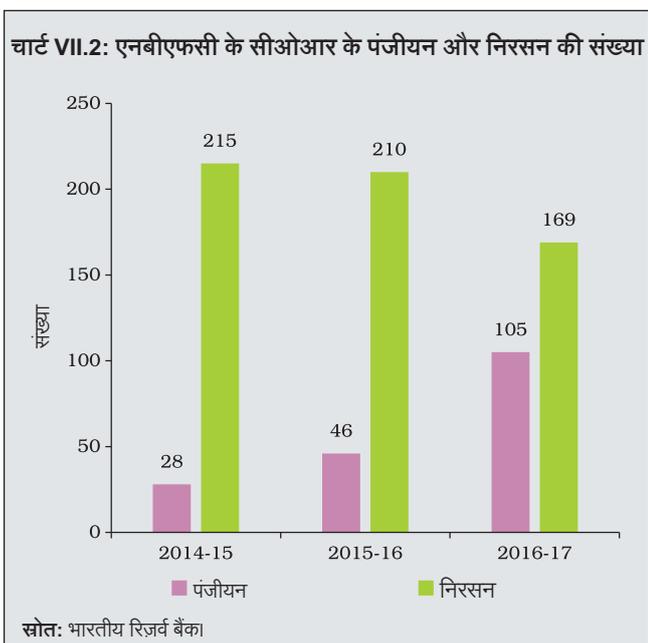
या उससे अधिक का है उन्हें जमाराशि ग्रहण न करने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी (एनबीएफसी-एनडी-एसआई) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। पंजीकरण प्रमाणपत्र (सीओआर) जारी करने के उद्देश्य से एनबीएफसी को जून 2016 में श्रेणी-1 और श्रेणी-2 के रूप में वर्गीकृत किया गया। श्रेणी-1 एनबीएफसी, जिनके पास जनता की निधियां नहीं होतीं/जनता की निधियां स्वीकार करने का इरादा नहीं रखतीं और जिनके पास ग्राहक इन्टरफेस नहीं होता/रखने का इरादा नहीं रखती हैं, के आवेदनों पर तीव्रता से विचार किया जाता है। एनबीएफसी को उनके द्वारा की जा रही गतिविधियों के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है ताकि क्षेत्र की विशिष्ट अपेक्षाओं को पूरा किया जा सके और विनियामकीय प्रथाओं के समुचित अनुकूलन से उन्हें स्थिर बनाया जा सके। समय के साथ नई श्रेणियों के जुड़ने से आज की तारीख तक इस वर्गीकरण के तहत 12 प्रकार की एनबीएफसी बन चुकी थीं (सारणी VII.1)।

VII.4 मार्च 2017 के अंत के अनुसार भारतीय रिज़र्व बैंक के पास 11,522 एनबीएफसी पंजीकृत थीं जिसमें से 178 एनबीएफसी-डी और 220 एनबीएफसी-एनडी-एसआई थीं। नए पंजीकरणों की तुलना में पंजीकरणों के अधिक संख्या में रद्द होने, या निवल स्वाधिकृत निधियों (एनओएफ) के संशोधित मानदंड को पूरा न कर पाने की वजह से पंजीकरण प्रमाणपत्र को स्वैच्छिक रूप से अभ्यर्पित करने या सीओआर के रद्द होने के कारण समय के साथ एनबीएफसी की संख्या में कमी आई है (चार्ट VII.2)।

### सारणी VII.1: एनबीएफसी का गतिविधियों पर आधारित वर्गीकरण

एनबीएफसी के प्रकार	गतिविधि
1. आस्ति वित्त कंपनी (एएफसी)	ऑटोमोबाइल, ट्रैक्टर और जनरेटर सहित उत्पादक/आर्थिक गतिविधियों का समर्थन करने वाली भौतिक संपत्तियों का वित्तपोषण।
2. लोन कंपनी	स्वयं से इतर किसी भी अन्य गतिविधि के लिए ऋण अथवा अग्रिम लेने या अन्य किसी माध्यम से वित्त प्रदान करना, किंतु इसमें आस्ति वित्त कंपनी शामिल नहीं है।
3. निवेश कंपनी	बिक्री के उद्देश्यों से प्रतिभूति अर्जित करना
4. एनबीएफसी- बुनियादी ढांचा वित्त कंपनी (एनबीएफसी-आईएफसी)	बुनियादी ढांचा ऋण प्रदान करना
5. एनबीएफसी-प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण कोर निवेश कंपनी (सीआईसी-एनडी-एसआई)	मुख्य रूप से इक्विटी बाजार में निवेश के लिए शेयर और प्रतिभूति अर्जित करना।
6. एनबीएफसी-बुनियादी ढांचा कर्ज निधि (एनबीएफसी-आईडीएफ)	बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में दीर्घकालिक ऋण के प्रवाह को सुगम बनाने के लिए।
7. एनबीएफसी-सूक्ष्म वित्त संस्थान (एनबीएफसी-एमएफआई)	आर्थिक रूप से वंचित समूहों को ऋण देना।
8. एनबीएफसी-फैक्टर	किसी समनुदेशक की प्राप्ति अर्जित करने या किसी छूट पर प्राप्ति के प्रतिभूति हित के विरुद्ध ऋण देने के व्यवसाय का ब्योरा देना।
9. एनबीएफसी-निष्क्रिय वित्तीय होल्डिंग कंपनी (एनओएफएचसी)	प्रमोटर्स/प्रमोटर समूहों को एक नया बैंक स्थापित करने की अनुमति प्रदान करने हेतु।
10. बंधक गारंटी कंपनी (एमजीसी)	बंधक गारंटी व्यवसाय करना।
11. एनबीएफसी-खाता समूहक (एनबीएफसी-एए)	ग्राहक को या ग्राहक द्वारा निर्दिष्ट किए गए अन्य को ग्राहक की वित्तीय आस्तियों के बारे में जानकारी इकट्ठा करना और एक समेकित, संगठित और पुनःप्राप्ति योग्य तरीके से प्रदान करना।
12. एनबीएफसी – समकक्षीय उधार प्लेटफॉर्म (एनबीएफसी-पी 2 पी)	धन जुटाने में मदद करने के लिए ऋणदाताओं और उधारकर्ताओं को एक साथ लाने के लिए एक ऑनलाइन मंच प्रदान करना।

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक।



### तुलन-पत्र

VII.5 सन 2014-15 से ठंडी पड़ी बैंक ऋण-संवृद्धि से उत्पन्न वित्तपोषण संबंधी अंतर को भरते हुए एनबीएफसी द्वारा दिए गए ऋण में हुई द्विअंकीय वृद्धि ने अर्थव्यवस्था की समुत्थानशक्ति और स्थिरता में सुधार किया। एनबीएफसी के समेकित तुलन-पत्रों<sup>1</sup> में तेजी लौटी और 2016-17 के दौरान इसमें पिछले वर्ष की तुलना में मामूली गिरावट होने के बावजूद विस्तार हुआ।

एनबीएफसी द्वारा विभिन्न स्रोतों से ली गई उधारियों, जो उनकी कुल देयताओं का 70 प्रतिशत बैठती हैं, में 2016-17 के दौरान 12.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो कि मुख्यतः बाजार आधारित लिखतों के माध्यम से जुटाए गईं, जैसे कि वाणिज्यिक दस्तावेज (सीपी) और डिबेन्चर, क्योंकि बैंकों से उधारियों में कमी आई। जनता की जमाराशियों में वृद्धि कमजोर रही जिसका मुख्य कारण नवंबर 2014 में संशोधित विनियामकीय दिशानिर्देश जारी करना रहा जिसमें यह अनिवार्य कर दिया गया था कि केवल रेटिंग प्राप्त एनबीएफसी-डी ही जनता से जमाराशियां स्वीकार कर सकेंगे। रेटिंग रहित कंपनियों के लिए यह अपेक्षित था कि वे 31 मार्च 2016 तक रेटिंग प्राप्त कर लें ताकि वे अपनी मौजूदा जमा राशियों को नवीकृत कर सकें/ नई जमाराशियां स्वीकार कर सकें अथवा उन्हें जनता को जमाराशियां वापस लौटानी होंगी। इसके अतिरिक्त, एनबीएफसी सेक्टर में सुसंगतता लाने के उद्देश्य से रेटिंग प्राप्त आस्ति वित्त कंपनियों (एएफसी) के लिए जमाराशि स्वीकार करने की सीमा को उनके एनओएफ के 4 गुना से कम कर 1.5 गुना कर दिया गया। ऋण और अग्रिम, जो कुल आस्तियों का तीन चौथाई होते हैं, में तीव्रता से वृद्धि हुई क्योंकि बैंकों की घटी हुई ऋण संवृद्धि ने उनके लिए स्थान बना दिया था। निवेशों ने भी पिछले वर्ष के गिरावटी रुख से विपरीत गति अपनाई और 2016-17 के दौरान उनमें अच्छी-खासी वृद्धि हुई जो जोशीले बाजार के परिप्रेक्ष्य में इक्विटी शेयरों में हुआ अधिक निवेश दर्शाता है (सारणी VII.2)।

**सारणी VII.2: एनबीएफसी के समेकित तुलन-पत्र**  
(मार्च के अंत में)

(राशि ₹ बिलियन में)

मदें	2014	2015	2016	2017	प्रतिशत घट-बढ़	
					2015-16	2016-17
1	2	3	4	5	6	7
1. शेयर पूंजी	737	851	761	921	-10.6	21.0
2. आरक्षित और अधिशेष निधियां	2,723	3,117	3,033	3,538	-2.7	16.7
3. सार्वजनिक जमाराशि	131	205	271	306	32.2	12.9
4. बैंक उधार	2,910	3,106	3,376	3,141	8.7	-7.0
5. डिबेन्चर्स	4,596	5,740	5,394	6,462	-6.0	19.8
6. वाणिज्यिक पत्र	462	630	852	1,267	35.2	48.7
7. अन्य उधार	2,175	2,761	2,639	2,878	-4.4	9.1
8. अन्य देनदारियां	766	875	904	1,158	3.3	28.1
<b>कुल देयताएं/आस्तियां</b>	<b>14,499</b>	<b>17,284</b>	<b>17,231</b>	<b>19,671</b>	<b>-0.3</b>	<b>14.2</b>
1. ऋण और अग्रिम	10,782	11,864	13,169	14,846	11.0	12.7
2. निवेश	2,159	2,603	2,253	2,673	-13.4	18.6
3. अन्य आस्तियां	1,558	2,817	1,810	2,152	-35.7	18.9

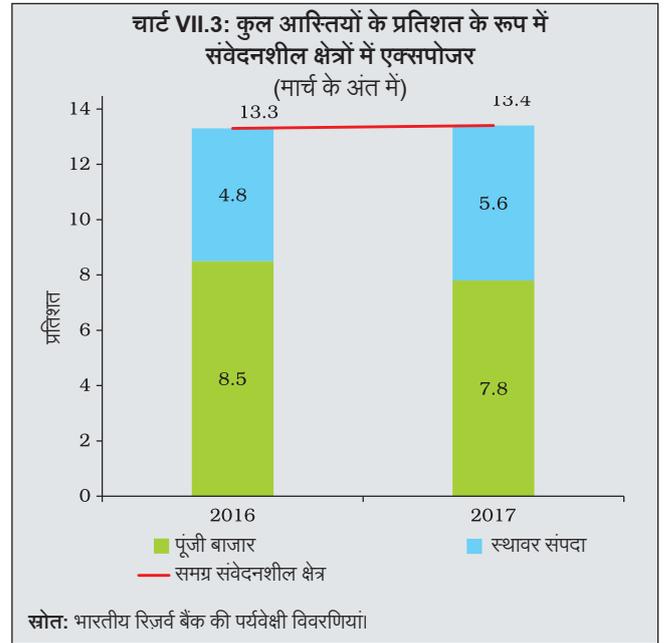
स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणी।

<sup>1</sup> एनबीएफसी-डी और एनबीएफसी-एनडी-एसआई के समेकित तुलन-पत्र के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

एनबीएफसी का क्षेत्रगत ऋण

VII.6 क्षेत्र विशेष की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने में एनबीएफसी को विशेषज्ञता हासिल होती है जिसमें खुदरा उपभोक्ता एवं वाहन ऋण, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई), बड़े उद्योग/अवसंरचना (मुख्यतः सरकारी कंपनियां) और अन्य के साथ सूक्ष्म वित्त शामिल हैं। खुदरा और सेवा क्षेत्र को प्रदान किए गए ऋण में हुई उल्लेखनीय वृद्धि वित्तीय समावेशन में उनकी बढ़ती हुई भूमिका दर्शाती है। उद्योग लगभग 60 प्रतिशत ऋण एनबीएफसी द्वारा प्राप्त करते हैं, इसके बाद खुदरा, सेवाएं और कृषि क्षेत्र आते हैं।

VII.7 सेक्टर के भीतर ऋण आबंटन के तहत उपभोक्ता टिकाऊ सामग्रियों और क्रेडिट कार्ड प्राप्य राशियों के संबंध में खुदरा ऋण सर्वाधिक तेज गति से बढ़ा, इसके पश्चात सेवाएं और उद्योग क्षेत्र आता है। दूसरी ओर, विमुद्रीकरण के कारण नकदी आधिक्य वाली मूल्य-वर्द्धन शृंखला में क्षणिक विघ्न आने के कारण कृषि और अनुषंगी गतिविधियों हेतु दिए जाने वाले ऋण में संकुचन हुआ (सारणी VII.3)। औद्योगिक और सेवाएं दोनों क्षेत्रों



के सूक्ष्म और लघु खंडों में 2016-17 के दौरान जोरदार वृद्धि देखी गई जबकि वाहन ऋणों में गिरावट आई जो कि विमुद्रीकरण का क्षणिक प्रभाव दर्शाता है (परिशिष्ट सारणी VII.1)।

संवेदनशील क्षेत्रों में एक्सपोजर

VII.8 पूंजी बाजार, स्थावर-संपदा क्षेत्र और पण्यों जैसी आस्तियों की कीमतों में होने वाले उतार-चढ़ाव के साथ जुड़े हुए जोखिमों को ध्यान में रखते हुए रिज़र्व बैंक ने इन्हें संवेदनशील क्षेत्रों के रूप में परिभाषित किया है। स्थावर-संपदा में एनबीएफसी का एक्सपोजर 2016-17 के दौरान बढ़ गया, जो कि उच्चतर प्रतिलाभ की तलाश को प्रकट करता है (चार्ट VII.3)।

एनबीएफसी का वित्तीय निष्पादन

VII.9 बढ़ी हुई प्रावधानीकरण आवश्यकताओं के कारण 2016-17 के दौरान एनबीएफसी की लाभप्रदता में गिरावट रही (सारणी VII.4)। आय की तुलना में लागत अनुपात बढ़ गया जो उनकी परिचालन कुशलता में गिरावट दर्शाती है।

VII.10 निवल लाभों में गिरावट दर्शाते हुए एनबीएफसी का इक्विटी पर प्रतिफल और आस्तियों पर प्रतिफल - जो दो प्रमुख

सारणी VII.3: गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों द्वारा चुनिंदा क्षेत्रों को दिया गया ऋण (मार्च के अंत में) (राशि ₹ बिलियन में)

मदें	2016	2017	2017 में सकल अग्रिमों में हिस्सेदारी (प्रतिशत)	प्रतिशत घट-बढ़
1	2	3	4	5
I. सकल अग्रिम राशि	13,169	14,846	-	12.7
II. गैर-खाद्य ऋण (1 से 5)	13,167	14,846	100.0	12.8
1. कृषि और संबद्ध गतिविधियां	392	346	2.3	-11.7
2. उद्योग (2.1 से 2.4)	8,063	8,940	60.2	10.9
2.1 माइक्रो और लघु	326	508	3.4	55.8
2.2 मध्यम	154	172	1.2	11.7
2.3 बड़े	3,726	4,375	29.5	17.4
2.4 अन्य	3,857	3,885	26.2	0.7
3. सेवाएं	1,865	2,224	15.0	19.2
4. खुदरा ऋण	2,047	2,490	16.8	21.6
4.1 वाहन/ऑटो ऋण	1,150	1,035	7.0	-10.0
5. अन्य गैर-खाद्य ऋण	801	847	5.7	5.7

टिप्पणी: 2015-16 में खाद्य ऋण लगभग ₹1 बिलियन था और 2016-17 में यह शून्य था।

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

**सारणी VII.4: एनबीएफसी सेक्टर के वित्तीय मापदंड**  
(मार्च के अंत में)

(राशि ₹ बिलियन में)

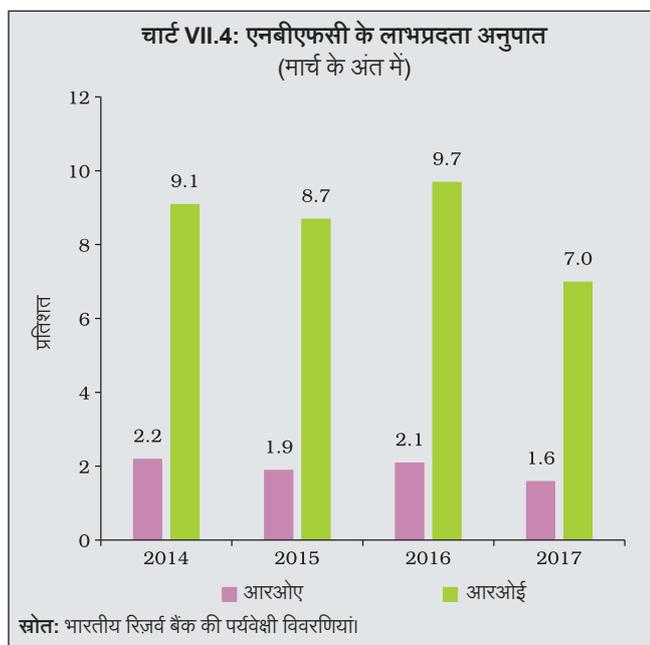
मदें	2014	2015	2016	2017
1	2	3	4	5
ए. आय	1,713	2,009	2,142	2,310
बी. व्यय	1,279	1,495	1,628	1,822
सी. निवल लाभ	313	365	367	314
डी. कुल आस्तियां	14,499	17,284	17,231	19,671
ई. वित्तीय अनुपात (कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में)				
(i) आय	11.8	11.6	12.4	11.7
(ii) व्यय	8.8	8.6	9.4	9.3
(iii) निवल लाभ	2.2	2.1	2.1	1.6
एफ. आय-लागत अनुपात	74.6	74.4	76.0	78.9

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

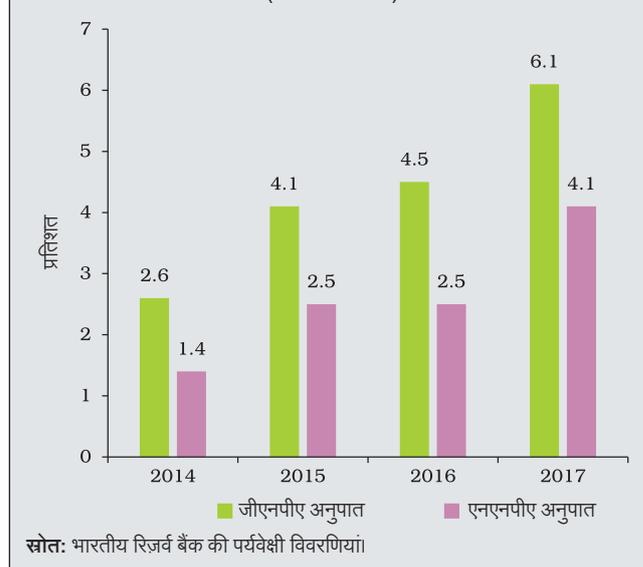
लाभप्रदता संकेतक होते हैं - पिछले एक वर्ष की तुलना में 2016-17 के दौरान कम रहे (चार्ट VII.4)

#### आस्ति गुणवत्ता

VII.11 वर्ष के दौरान, औद्योगिक गतिविधियों में सुस्ती के कारण एनबीएफसी को अपनी आस्ति गुणवत्ता में कुछ गिरावट का सामना करना पड़ा। सन 2016-17 के दौरान उनका सकल



**चार्ट VII.5: एनबीएफसी की आस्ति गुणवत्ता**  
(मार्च के अंत में)



अनर्जक आस्ति अनुपात (जीएनपीए) और निवल अनर्जक आस्ति अनुपात (एनएनपीए) दोनों ही में बढ़ोतरी हुई। इन अनुपातों में हाल ही में हुई वृद्धि एनपीए पहचानने के मानदंडों में किए गए संशोधनों को वित्त वर्ष 2015-16<sup>2</sup> के प्रारंभ से चरण-बद्ध रूप में लागू किया जाना भी प्रकट होता है (चार्ट VII.5)।

VII.12 आस्ति गुणवत्ता में हुई गिरावट संदेहास्पद आस्तियों के हिस्से में हुई वृद्धि में भी परिलक्षित होती है जो इस क्षेत्र में एनपीए का काल-प्रभावित होना दर्शाता है (सारणी VII.5)।

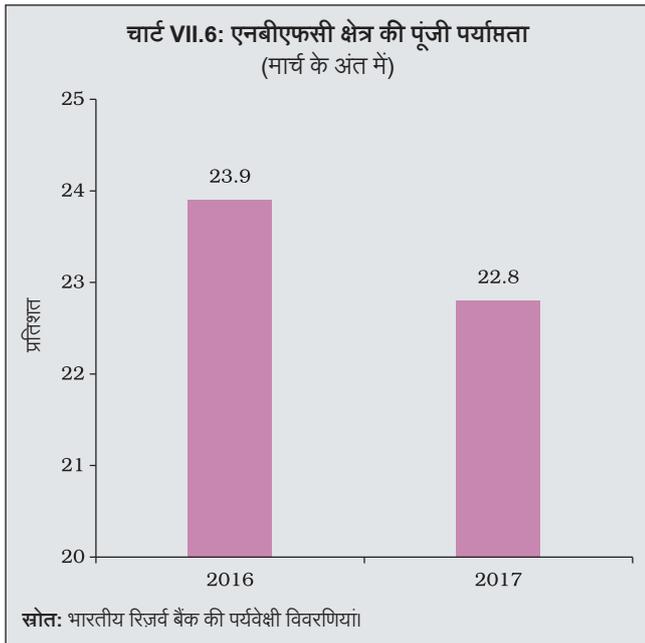
**सारणी VII.5: एनबीएफसी की आस्तियों का वर्गीकरण**

(प्रतिशत)

मदें	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
1	2	3	4	5
मानक आस्तियां	95.7	95.8	95.5	95.0
अवमानक आस्तियां	2.6	2.8	2.6	2.6
संदिग्ध आस्तियां	1.2	1.1	1.6	2.1
हानि आस्तियां	0.5	0.3	0.3	0.3
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

<sup>2</sup> किराया-खरीद के अतिरिक्त आस्तियों को एनपीए के रूप में वर्गीकरण हेतु समयावधि को क्रमिक रूप से कम करके मार्च 2016 को समाप्त वित्त वर्ष हेतु 5 माह, मार्च 2017 को वित्त वर्ष हेतु 4 माह और मार्च 2018 को समाप्त होने वाले वित्त वर्ष हेतु 3 माह किया गया है।



### पूंजी पर्याप्तता

VII.13 आस्ति गुणवत्ता में संयमित गिरावट और ऋण पोर्टफोलियो में विस्तार के साथ ही एनबीएफसी क्षेत्र की जोखिम-भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर) में 2016-17 के दौरान कमी आई (चार्ट VII.6)। इसके बावजूद यह 15 प्रतिशत के निर्धारित मानदंडों के काफी ऊपर रहा।

### जमा-राशि ग्रहण न करने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी

VII.14 एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र की कुल आस्तियों में 86 प्रतिशत हिस्सा एनबीएफसी-एनडी-एसआई का है। एनबीएफसी के लिए संशोधित विनियामकीय ढांचे, जिसने

एनबीएफसी-एनडी-एसआई को परिभाषित करने के लिए आस्ति आकार की सीमा को ₹1 बिलियन से बढ़ाकर ₹5 बिलियन कर दिया था, के परिप्रेक्ष्य में 2015-16 में इन कंपनियों की संख्या में लगभग आधे की गिरावट आई। तदनुसार, परिवर्तित परिभाषा के दृष्टिकोण में कई एनबीएफसी-एनडी-एसआई को एनबीएफसी-एनडी के रूप में पुनः वर्गीकृत किया गया। स्वामित्व के संदर्भ में एनबीएफसी-एनडी-एसआई की कुल आस्तियों का 62.9 प्रतिशत भाग गैर-सरकारी एनबीएफसी-एनडी-एसआई के पास धारित था (सारणी VII.6)।

### तुलन-पत्र

VII.15 एनबीएफसी द्वारा दिए ऋण में वृद्धि होने के कारण 2016-17 में एनबीएफसी-एनडी-एसआई के समेकित तुलन-पत्र में काफी विस्तार हुआ जिसने बैंक ऋण संवृद्धि में कमी के कारण उत्पन्न वित्त-पोषण अंतर को भरते हुए अर्थव्यवस्था की सुनम्यता और स्थिरता में सुधार किया (बॉक्स VII.1)।

VII.16 देयताओं में जहाँ मुख्य रूप से शेयर पूंजी, डिबेन्चर और सीपी के कारण अभिवृद्धि हुई, वहीं दूसरी ओर उक्त वर्ष के दौरान बैंकों और सरकार दोनों से ली गयी उधारराशियों में कमी आयी। यद्यपि एनबीएफसी-एनडी-एसआई के ऋणों और अग्रिमों में वर्ष के दौरान बढ़ोतरी हुई, निवेश की गति अपेक्षाकृत अधिक रही जिससे यह संकेत मिलता है कि डिबेन्चरों, कॉर्पोरेट बॉन्डों, इक्विटी शेयरों और म्यूचुअल फंडों जैसे उच्च प्रतिलाभ वाली लिखतों के रूप में निधियाँ संचित रखने को वरीयता मिली। (सारणी VII.7)

VII.17 सन 2016-17 के दौरान एनबीएफसी-एनडी-एसआई के समेकित तुलन-पत्र के आकार में वृद्धि में बड़ा योगदान श्रेणीवार ऋण कंपनियों (एलसी) का रहा और इसमें रिटेल संविभाग,

**सारणी VII.6: एनबीएफसी-एनडी-एसआई के स्वामित्व का स्वरूप**  
(मार्च के अंत में)

(राशि ₹ बिलियन में)

स्वामित्व	2014		2015		2016		2017	
	संख्या	आस्ति आकार						
1	2	3	4	5	6	7	8	9
ए. सरकारी कंपनियां	15	4,181	15	5,337	15	5,765	15	6,280
बी. गैर-सरकारी कंपनियां (1+2)	478	8,561	456	9,895	205	9,068	205	10,637
1. पब्लिक लि. कंपनियां	252	1,705	243	2,120	105	2,026	105	8,268
2. प्राइवेट लिमिटेड कंपनियां	226	6,856	213	7,775	100	7,041	100	2,369
<b>कुल (ए+बी)</b>	<b>493</b>	<b>12,742</b>	<b>471</b>	<b>15,232</b>	<b>220</b>	<b>14,832</b>	<b>220</b>	<b>16,917</b>

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

**बॉक्स VII.1**

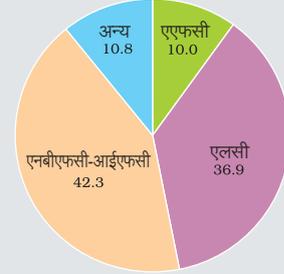
**गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की क्रेडिट संवृद्धि को प्रभावित करने वाले घटक**

आर्थिक संवृद्धि प्रक्रिया में क्रेडिट को एक महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। लेवाइन, तथा अन्य (1998) ने पाया कि वित्तीय विकास और आर्थिक संवृद्धि में प्रबल सकारात्मक संबंध है। अनुभवजन्य विश्लेषण भी दिखाते हैं कि मजबूत और आर्थिक संवृद्धि, शिथिल मौद्रिक शर्तों और बैंकिंग क्षेत्र की सही सेहत का संयोग उच्चतर क्रेडिट संवृद्धि की तरफ ले जाता है, जबकि उच्च मुद्रास्फीति इसके लिए अहितकर है (गुओ और स्टेपन्नयान, 2011)। भारत में हालिया वर्षों के दौरान बैंक क्रेडिट में तेज गिरावट आई है, जबकि अवसंरचना, खुदरा ऋण और सेवा क्षेत्र जैसे उत्पादक क्षेत्रों में एनबीएफसी का क्रेडिट बरकरार रहा। बैंकों और एनबीएफसी द्वारा प्रदत्त कुल क्रेडिट में एनबीएफसी का हिस्सा मार्च 2008 के 9.5 प्रतिशत से बढ़ाकर मार्च 2017 में 15.5 प्रतिशत हो गया। एनबीएफसी के क्रेडिट की गहनता, अर्थात् जीडीपी के प्रतिशत के तौर पर क्रेडिट भी सुस्थिर गति से बढ़ा और मार्च 2017 के अंत में 8 प्रतिशत पहुँच गया। इस पृष्ठभूमि में वर्णनात्मक विश्लेषण और वेक्टर ऑटोरिग्रेशन का प्रयोग करते हुए एनबीएफसी के क्रेडिट को प्रभावित करने वाले घटकों का अनुभवजन्य परीक्षण करने का प्रयास इस बॉक्स में किया गया है।

आस्ति गुणवत्ता चिंताओं के कारण हाल ही के वर्षों में बैंक-क्रेडिट संवृद्धि में गिरावट के साथ-साथ मुख्यतया आस्ति वर्गिकरण के परिवर्तित मानदंडों के कारण एनबीएफसी की आस्ति गुणवत्ता में भी गिरावट आई है (चार्ट-1)। हालांकि, अवसंरचना क्षेत्र को एनबीएफसी द्वारा दिए जाने वाले क्रेडिट में प्रबल संवृद्धि रही, खासकर एनबीएफसी-अवसंरचना वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी-आईएफसी) द्वारा दिए गए क्रेडिट में। एनबीएफसी-आईएफसी को अपनी कुल आस्तियों का न्यूनतम 75 प्रतिशत अवसंरचना ऋणों में लगना होता है और एनबीएफसी-एनडी-एसआई द्वारा दिए गए क्रेडिट का लगभग 2/5 हिस्सा इन्हीं का है। इस प्रकार खुदरा और सेवा प्रखंडों को एनबीएफसी द्वारा दिए जाने वाले कर्जों में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है जैसा कि इस क्षेत्र को ऋण देने वाले मुख्य दो वर्गों यथा ऋण कंपनियों (एएफसी) और आस्ति वित्तीय कंपनियों के हिस्से से प्रकट होता है (चार्ट-2)।

एनबीएफसी के क्रेडिट को प्रभावित करने वाले घटकों का आगामी परीक्षण करने के प्रयोजन से जीडीपी (गैर कृषि लागत पर) 91 दिवसीय खजाना बिल की दरों और औद्योगिक क्षेत्र द्वारा क्षमता उपभोग के बारे में जून 2007 से जून 2017 के दौरान तिमाही डाटा लेते हुए वेक्टर ऑटो रिग्रेशन आकलन किया गया। जीडीपी और क्रेडिट शृंखला को मौसम निरपेक्ष किया गया और पाया गया

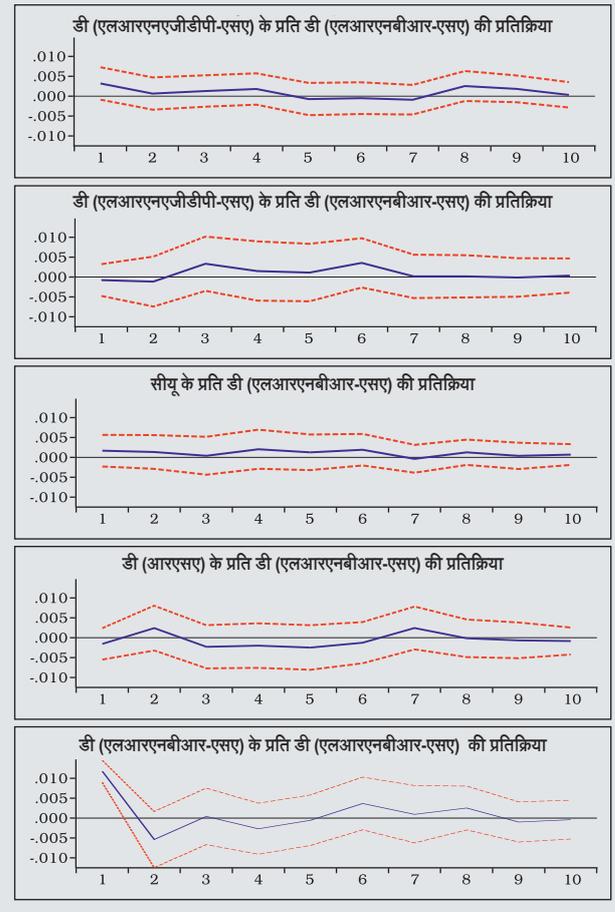
**चार्ट 2: कुल क्रेडिट नियोजन में एनबीएफसी-एनडी-एसआई की प्रमुख श्रेणियों का हिस्सा (मार्च के अंत में)**



स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियाँ।

कि यह यह प्रथम अंतराल स्थिर है जबकि सम स्तर पर सीयू स्थिर पाया गया। वर्ष 2008 के वित्तीय संकट हेतु एक उमी को बहिर्जात चरों के रूप में शामिल किया गया है। एआईसी लैग लेथ मानदण्ड के अनुसार चार तिमाहियों के लैग

**चोलेस्की वन एस.डी. के लिए प्रतिसाद (डी.एफ. समायोजित) नवोन्मेष ± 2एस.ई.**



(जारी...)

**चार्ट 1: बैंकों और एनबीएफसी-एनडी-एसआई और बैंकों का एनपीए अनुपात (मार्च के अंत में)**



स्रोत: 1. भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणियाँ, विभिन्न अंक  
2. भारत में बैंकिंग की प्रवृत्ति एवं प्रगति पर रिपोर्ट, विभिन्न अंक  
3. वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, विभिन्न अंक

को उचित पाया गया। आवेगी प्रतिसाद ने अधिकांशतया वीएआर में शामिल सभी चरांकों के प्रतिसाद में एनबीएफसी के क्रेडिट में परिवर्तन की अपेक्षित दिशा को दर्शाया है। खजाना बिलों की दर में एक मानक माध्य बढ़ोतरी से आरंभ में एनबीएफसी क्रेडिट में बढ़ोतरी की ओर ले जाता है। जीडीपी और क्षमता उपभोग में बढ़ोतरी से एनबीएफसी क्रेडिट पर धनात्मक प्रभाव पाया गया जो सात तिमाहियों तक कायम रहा। बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट (पुनर्संचित आस्तियों में बढ़ोतरी) से एनबीएफसी क्रेडिट में आरंभिक बढ़ोतरी हुई जो प्रतिस्थापन प्रभाव को प्रदर्शित करता है, जिसमें उधार देने में बैंकों की अरुचि से एनबीएफसी द्वारा उधार देने के अवसर सृजित होते हैं हालांकि

क्रमिक रूप से बैंकों की आस्ति गुणवत्ता चिंताएं शायद समूचे आर्थिक परिवेश को प्रभावित करना आरंभ कर देती है जो एनबीएफसी क्रेडिट में गिरावट की तरफ ले जाता है।

संदर्भ :

गुओ के. एण्ड वी. स्टेपान्यान (2011), 'डिटर्मिनेंट्स ऑफ बैंक क्रेडिट इन इमर्जिंग मार्केट इकॉनॉमीज, आईएमएफ वर्किंग पेपर, डब्लू पी/ 11/51.

लेवाइन आर. एण्ड एस. जेरवॉस, (1998), 'स्टॉक मार्केट्स, बैंक्स, एण्ड इकॉनॉमिक ग्रोथ', दि अमेरिकन इकॉनॉमिक रिव्यू, 88(3): 537-558

खासतौर पर उपभोक्ता वस्तुओं के लिए ऋण, में हुई पर्याप्त वृद्धि ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनियाँ एनबीएफसी-एनडी-एसआई कंपनियों की एक प्रमुख श्रेणी हैं, परंतु इस क्षेत्र में व्याप्त आस्ति गुणवत्ता संबंधी चिंताओं के कारण जोखिम से बचने का रुख दिखा और इसी के परिणामस्वरूप इनके तुलन-पत्र के आकार में थोड़ी गिरावट आयी। एफसी के तुलन-पत्र लगभग अपरिवर्तित रहे जिससे यह संकेत मिलता

है कि विमुद्रीकरण के बाद परिसंपत्तियां खरीदने के निर्णय स्थगित रखे गए। एनबीएफसी-माइक्रो फाइनेन्स इंस्टीट्यूशंस (एनबीएफसी-एमएफआई) के तुलन-पत्र में हुई कम वृद्धि भी आंशिक रूप से कुछ बड़े एनबीएफसी-एमएफआई के लघु वित्त बैंकों में तब्दील हो जाने के कारण थी (सारणी VII.8)। निवेश कम्पनियों के तुलन-पत्र में संयमित रूप से विस्तार हुआ, जबकि कर्जों और अग्रिमों में बढ़ोतरी हुई, लेकिन निवेशों में गिरावट रही।

#### संसाधन संग्रहण

VII.18 एनबीएफसी-एनडी-एसआई ने डिबेन्चरों और सीपी के जरिए संसाधन जुटाने का कार्य किया जबकि उनके द्वारा बैंकों और सरकार से ली जाने वाली उधारराशियों में वर्ष के दौरान कमी आयी (सारणी VII.9)।

#### वित्तीय कार्यनिष्पादन

VII.19 खर्चों में वृद्धि होने और कर प्रावधानों के चलते 2016-17 में एनबीएफसी-एनडी-एसआई के निवल लाभ में कमी आयी (सारणी VII.10)। इस वर्ष के दौरान उनका लागत-आय अनुपात बढ़ा।

#### सुदृढ़ता संकेतक

VII.20 एनबीएफसी-एनडी-एसआई के सकल लाभ में 2016-17 के दौरान अधिक वृद्धि हुई जो आंशिक तौर पर यह दर्शाता है कि बैंक एनपीए मानदंडों के साथ सामंजस्य बनाने की ओर अग्रसर हैं। एफसी को छोड़कर सभी श्रेणियों की एनबीएफसी-एनडी-एसआई ने अपनी आस्ति गुणवत्ता में गिरावट रिपोर्ट की है जो एनबीएफसी-एमएफआई में सर्वाधिक देखने को मिली और जिसका कारण था विमुद्रीकरण के फलस्वरूप नकदी के प्रवाह में समय-समय पर रुकावट आना (चार्ट VII.7ए)। निवल अनर्जक आस्तियों में भी व्यापक रूप से वैसा ही रुख रहा जैसा सकल एनपीए में था (चार्ट VII.7बी)।

#### सारणी VII.7: एनबीएफसी-एनडी-एसआई का समेकित तुलन पत्र (मार्च के अंत में)

(राशि ₹ बिलियन में)

मदें	2014	2015	2016	2017	प्रतिशत घट-बढ़	
					2015-16	2016-17
1	2	3	4	5	6	7
1. शेयर पूंजी	699	812	726	922	-10.6	27.0
2. आरक्षित और अधिशेष निधि	2,469	2,818	2,699	3,124	-4.2	15.7
3. उधारियां	8,916	10,853	10,661	11,917	-1.8	11.8
4. वर्तमान देनदारियां	286	294	291	339	-1.0	16.5
5. प्रावधान	371	455	455	615	0.0	35.2
<b>कुल देयताएं/ आस्तियां</b>	<b>12,742</b>	<b>15,232</b>	<b>14,832</b>	<b>16,917</b>	<b>-2.6</b>	<b>14.1</b>
1. ऋण और अग्रिम	9,367	10,145	11,039	12,396	8.8	12.3
2. निवेश	2,081	2,503	2,172	2,555	-13.2	17.6
3. नगदी एवं बैंक जमा-शेष	382	535	485	698	-9.3	43.9
4. अन्य चालू आस्तियां	730	1,850	952	1,020	-48.5	7.1
5. अन्य आस्तियां	183	199	223	264	12.1	18.4

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

**सारणी VII.8: एनबीएफसी के वर्गीकरण द्वारा एनबीएफसी-एनडी-एसआई की देयताओं और आस्तियों के प्रमुख घटक**  
(मार्च के अंत में)

(राशि ₹ बिलियन में)

श्रेणी/देयता	2016			2017			कुल देयताएं का प्रतिशत अंतर
	उधारी	अन्य देयताएं	कुल देयताएं	उधारी	अन्य देयताएं	कुल देयताएं	
1	2	3	4	5	6	7	8
आस्तित्व वित्त कंपनी	1,189	380	1,569	1,167	410	1,576	0.4
आईडीएफ - एनबीएफसी	49	17	67	98	22	120	79.1
एनबीएफसी-आईएफसी	4,593	973	5,566	4,668	1,157	5,825	4.7
निवेश कंपनी	1,025	1,029	2,054	1,039	1,154	2,193	6.8
एनबीएफसी - एमएफआई	413	156	569	400	204	604	6.2
ऋण कंपनी	3,402	1,605	5,007	4,545	2,053	6,598	31.8
<b>कुल</b>	<b>10,671</b>	<b>4,160</b>	<b>14,832</b>	<b>11,917</b>	<b>5,000</b>	<b>16,917</b>	<b>14.1</b>
श्रेणी/आस्तित्व	ऋण एवं अग्रिम	निवेश	कुल आस्तियां	ऋण एवं अग्रिम	निवेश	कुल आस्तियां	कुल आस्तियों का प्रतिशत भिन्नता
आस्तित्व वित्त कंपनी	1,390	44	1,569	1,325	104	1,576	0.4
आईडीएफ - एनबीएफसी	36	28	67	81	33	120	79.1
एनबीएफसी-आईएफसी	5,167	114	5,566	5,287	132	5,825	4.7
निवेश कंपनी	365	1,302	2,054	532	1,262	2,193	6.8
एनबीएफसी - एमएफआई	422	27	569	400	61	604	6.2
ऋण कंपनी	3,660	657	5,007	4,771	963	6,599	31.8
<b>कुल</b>	<b>11,039</b>	<b>2,172</b>	<b>14,832</b>	<b>12,396</b>	<b>2,555</b>	<b>16,917</b>	<b>14.1</b>

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

VII.21 मार्च 2017 की स्थिति देखें तो एनबीएफसी-एनडी-एसआई में जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात

(सीआरएआर) सभी श्रेणियों में इस क्षेत्र के लिए निर्धारित मानदण्ड से अधिक बना रहा। फिर भी इंफ्रास्ट्रक्चर डेट फंड -

**सारणी VII.9: एनबीएफसी-एनडी-एसआई के उधार के स्रोत**  
(मार्च के अंत में)

(राशि ₹ बिलियन में)

मर्दे	2014	2015	2016	2017	प्रतिशत अंतर	
					2015-16	2016-17
1	2	3	4	5	6	7
1. डिबेंचर्स	4,212	5,287	4,855	5,795	-8.2	19.4
2. बैंक उधार	2,377	2,541	2,716	2,527	6.9	-7.0
3. वित्तीय संस्थाओं से उधार	145	144	159	263	10.4	65.4
4. इंटर-कॉर्पोरेट उधारी	253	279	356	404	27.6	13.5
5. वाणिज्यिक पत्र	417	549	786	1,119	43.2	42.4
6. सरकार से उधार	100	185	195	193	5.4	-0.9
7. अधीनस्थ ऋण	233	273	304	333	11.4	9.5
8. अन्य उधार	1,178	1,593	1,299	1,283	-18.5	-1.2
<b>9. कुल उधार</b>	<b>8,916</b>	<b>10,853</b>	<b>10,671</b>	<b>11,917</b>	<b>-1.7</b>	<b>11.7</b>

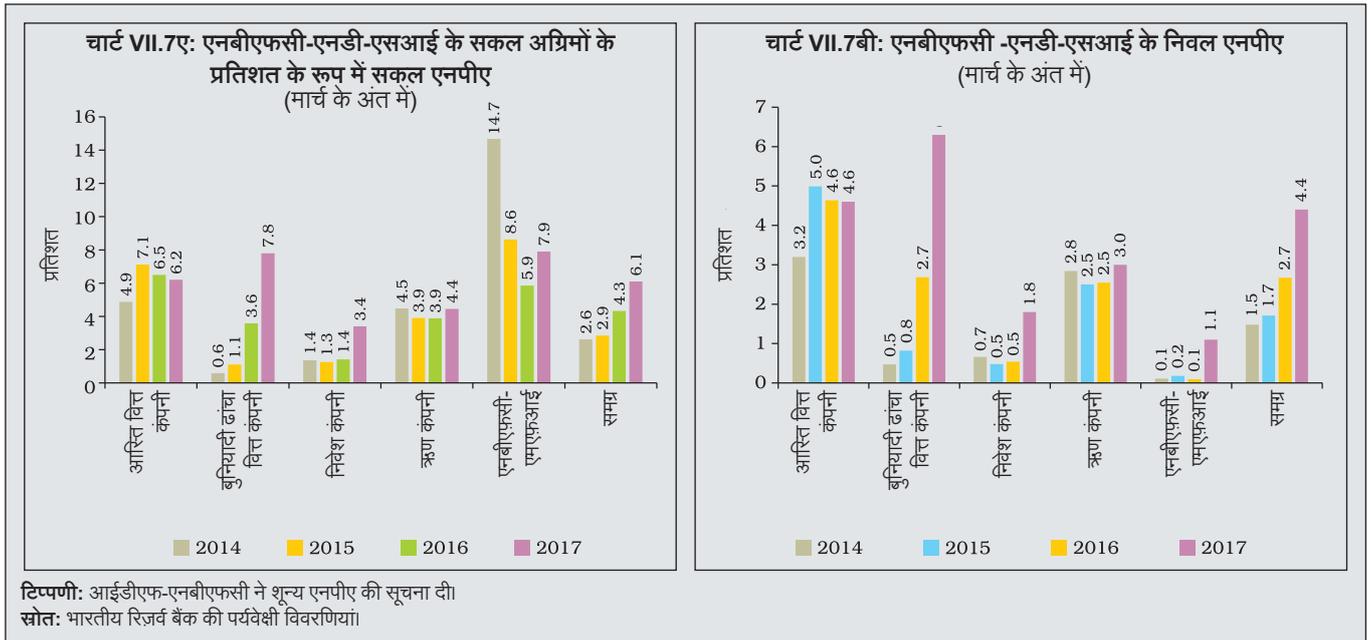
स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

**सारणी VII.10: एनबीएफसी-एनडी-एसआई का वित्तीय कार्यनिष्पादन**

(राशि ₹ बिलियन में)

मर्दे	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
1	2	3	4	5
<b>ए. आय (i+ii)</b>	<b>1,443</b>	<b>1,702</b>	<b>1,785</b>	<b>1,909</b>
(i) निधि आधारित	1,409	1,662	1,736	1,847
(ii) शुल्क आधारित	34	40	49	61
<b>बी. व्यय (i+ii+iii)</b>	<b>1,071</b>	<b>1,257</b>	<b>1,343</b>	<b>1,498</b>
(i) वित्तीय जिसमें से ब्याज भुगतान	775	900	913	958
(ii) परिचालन	327	374	387	441
(iii) अन्य	155	182	232	280
<b>सी. कर प्रावधान</b>	<b>101</b>	<b>128</b>	<b>124</b>	<b>147</b>
<b>डी. परिचालन लाभ</b>	<b>371</b>	<b>446</b>	<b>441</b>	<b>410</b>
<b>ई. निवल लाभ</b>	<b>270</b>	<b>318</b>	<b>318</b>	<b>263</b>
<b>एफ. कुल आस्तियां</b>	<b>12,742</b>	<b>15,232</b>	<b>14,832</b>	<b>16,917</b>
<b>जी. वित्तीय अनुपात (कुल आस्तियों के अनुसार प्रतिशत)</b>				
(i) आय	11.3	11.2	12.0	11.3
(ii) निधि आय	11.1	10.9	11.7	10.9
(iii) शुल्क आय	0.3	0.3	0.3	0.4
(iv) व्यय	8.4	8.3	9.1	8.9
(v) वित्तीय व्यय	6.1	5.9	6.2	5.7
(vi) परिचालन व्यय	1.2	1.2	1.6	1.7
(vii) कर प्रावधान	0.8	0.8	0.8	0.9
(viii) निवल लाभ	2.1	2.1	2.1	1.6
<b>एच. आय-लागत अनुपात</b>	<b>74.3</b>	<b>77.8</b>	<b>75.3</b>	<b>78.5</b>

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

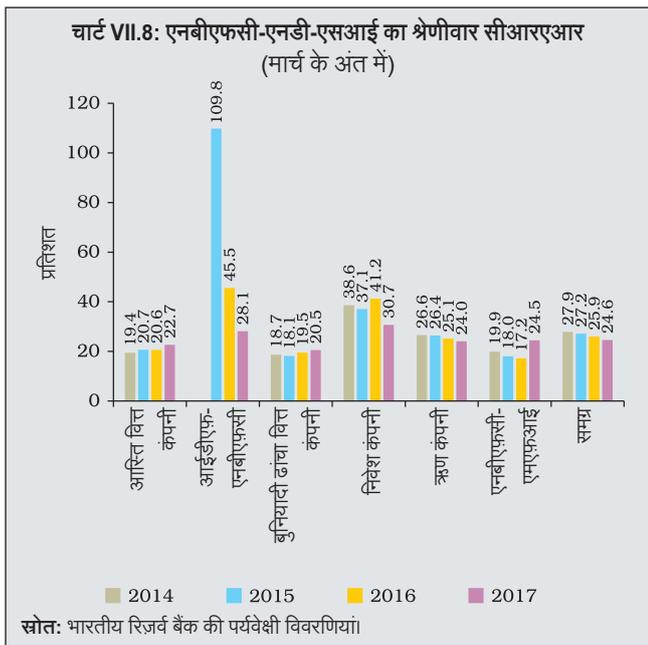


एनबीएफसी (आईडीएफ-एनबीएफसी), आईसी और एलसी द्वारा अपने ऋण संविभाग में भारी वृद्धि के साथ ही समग्र सीआरएआर में पिछले वर्ष की तुलना में थोड़ी कमी आयी (चार्ट VII.8)।

**एनबीएफसी-एनडी-एसआई में बैंकों का एक्सपोजर**

VII.22 एनबीएफसी-एनडी-एसआई द्वारा लिए गए कुल उधारों में से 21 प्रतिशत उधार राशियाँ बैंकों से ली गयी थीं। समूहवार देखें तो सरकारी बैंकों को पीछे छोड़ते हुए निजी बैंक एनबीएफसी-

एनडी-एसआई के लिए सबसे बड़े ऋणदाता के रूप में उभरे। एनबीएफसी-एनडी-एसआई बैंकों से मुख्य रूप से मीयादी ऋण और डिबेन्चरों के रूप में उधार लेती हैं। परंपरागत ऋणदाता, सरकारी बैंक सामान्य रूप से मीयादी ऋण के रूप में उधार देते हैं जबकि नये निजी बैंक डिबेन्चरों के माध्यम से उधार देते हैं इस आशा के साथ कि अर्थव्यवस्था में मौद्रिक सुलभता के समय उन्हें इस पर पूंजीगत लाभ होगा (सारणी VII.11)।



**सारणी VII.11: एनबीएफसी-एनडी-एसआई सेक्टर का बैंक एक्सपोजर (मार्च 2017 के अंत में)**

(₹ बिलियन में)

बैंक समूह	सावधि ऋण	कार्यशील पूंजी ऋण	डिबेन्चर	वाणिज्यिक पत्र	अन्य	कुल
1	2	3	4	5	6	7
ए. राष्ट्रीयकृत बैंक	936	10	415	157	147	1,665
बी. स्टेट बैंक समूह	330	521	3	179	1	1,034
सी. पुराने निजी बैंक	281	31	2	0	0	313
डी. नए निजी बैंक	447	103	954	204	106	1,814
ई. विदेशी बैंक	67	3	6	92	3	170
<b>सभी बैंक</b>	<b>2,060</b>	<b>668</b>	<b>1,381</b>	<b>631</b>	<b>257</b>	<b>4,996</b>

**स्रोत:** भारतीय रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

**सारणी VII.12: एनबीएफसी-डी के स्वामित्व पैटर्न**  
(मार्च के अंत में)

(राशि ₹ बिलियन में)

प्रकार	2014		2015		2016		2017 अ	
	संख्या	आस्ति आकार						
1	2	3	4	5	6	7	8	9
ए. सरकारी कंपनियां	5	251	5	271	5	285	2	273
बी. गैर-सरकारी कंपनियां (1 + 2)	210	1,506	195	1,781	169	2,114	123	2,482
1. पब्लिक लि. कंपनियां	5	1	4	0	3	0	2	0
2. प्राइवेट लिमिटेड कंपनियां	205	1,505	191	1,781	166	2,114	121	2,482
<b>कुल (ए+बी)</b>	<b>215</b>	<b>1,757</b>	<b>200</b>	<b>2,052</b>	<b>174</b>	<b>2,399</b>	<b>125</b>	<b>2,755</b>

अ.: अनंतिम।

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

**जमाराशि स्वीकार करने वाली एनबीएफसी**

VII.23 मार्च 2017 के अंत की स्थिति के अनुसार एनबीएफसी की कुल आस्तियों का 14.0 प्रतिशत और उनके द्वारा विनियोजित कुल ऋण का 16.2 प्रतिशत हिस्सा एनबीएफसी-डी से आता है। एनबीएफसी-डी को जनता से 12 से 60 महीनों तक के लिए मीयादी जमा स्वीकार करने की अनुमति है। अगर जमा की बात करें तो मार्च 2017 के अंत की स्थिति के अनुसार कुल जमा में 11.1 प्रतिशत हिस्सेदारी एनबीएफसी-डी की रही; हालांकि निधियों का सबसे बड़ा स्रोत उधारराशियां रहीं और कुल निधि में इनकी हिस्सेदारी 66.7 प्रतिशत रही। निधियों के अन्य स्रोत थे – डिबेन्चर, सीपी और अन्य अंतर-कॉर्पोरेट ऋण। सन 2016-17 के दौरान गैर सरकारी स्वामित्व वाली एनबीएफसी की आस्तियां बढ़ीं जबकि सरकारी स्वामित्व वाली एनबीएफसी की आस्तियों में कमी आयी (सारणी VII.12)।

**तुलन-पत्र**

VII.24 क्रेडिट में हुई भारी वृद्धि और बेहतर प्रतिलाभ की आशा में एनबीएफसी कंपनियों द्वारा बड़ी मात्रा में किए गए निवेश के परिणामस्वरूप 2016-17 में तुलन-पत्र का आकार बढ़ा (सारणी VII.13)। क्रेडिट मुख्य रूप से ट्रांसपोर्ट ऑपरेटरों, टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं तथा मंझोले एवं बड़े उद्योगों जैसे क्षेत्रों को दिया गया। देयताओं को देखें तो वृद्धि मुख्यतः डिबेन्चरों, जनता से प्राप्त जमाराशियों और वाणिज्यिक पत्रों (सीपी) में हुई। बैंकों से उधार में धीरे-धीरे कमी आयी क्योंकि एनबीएफसी-डी ने अपने निधि-स्रोतों का विविधीकरण करते हुए बाजार आधारित लिखतों को तरजीह दी। एनबीएफसी-डी के लिए डिबेन्चर निधीयन के बड़े स्रोत रहे।

**एनबीएफसी-डी के श्रेणीवार मुख्य संकेतक**

VII.25 एनबीएफसी-डी की तीन श्रेणियाँ हैं, यथा - आस्ति वित्तीयन कंपनियां (एएफसी), ऋणदाता कंपनियां (एलसी) और निवेश कंपनियां (आईसी) जिनमें, यदि एनबीएफसी-डी की कुल आस्तियों की दृष्टि से देखें तो, बाद की श्रेणियां नगण्य हैं। श्रेणीवार देखें तो आस्ति वित्तीयन कंपनियों की जमाराशियां वर्ष के दौरान कम हुईं जिसके दो प्रमुख कारण प्रतीत होते हैं- पहला, इस श्रेणी के अंतर्गत कंपनियों की संख्या में कमी आना और

**सारणी VII.13: एनबीएफसी-डी का समेकित तुलनपत्र**  
(मार्च के अंत में)

(राशि ₹ बिलियन में)

मर्दे	2016	2017	अंतर (प्रतिशत)
1	2	3	4
1. शेयर पूंजी	35	33	-5.7
2. आरक्षित और अधिशेष	343	380	10.8
3. सार्वजनिक जमा	271	306	12.9
4. डिबेन्चर्स	539	668	23.9
5. बैंक उधार	660	614	-7.0
6. वित्तीय संस्थाओं से उधार	23	31	34.8
7. अंतर-कॉर्पोरेट उधार	6	14	133.8
8. वाणिज्यिक पत्र	66	148	124.4
9. सरकार से उधार	30	0	-100.0
10. अधीनस्थ ऋण	88	119	35.2
11. अन्य उधार	179	246	37.4
12. वर्तमान देनदारियों	79	95	20.3
13. प्रावधान	79	103	30.4
<b>कुल देयताएं/आस्तियां</b>	<b>2,399</b>	<b>2,755</b>	<b>14.8</b>
1. ऋण और अग्रिम	2,073	2,405	16.0
2. किराया खरीद और लीज आस्तियां	45	44	-2.2
3. निवेश	92	125	35.9
4. नकद और बैंक शेष	100	88	-12.0
5. अन्य आस्तियां	90	92	2.2

अ.: अनंतिम।

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक, एनबीएफसी-डी की तिमाही विवरणी।

**सारणी VII.14: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के वर्गीकरण द्वारा एनबीएफसी-डी की देयताएं और आस्तियों के प्रमुख घटक**  
(मार्च के अंत में)

(राशि ₹ बिलियन में)

मर्दे	आस्ति वित्त कंपनियां				ऋण कंपनियां				कुल			
	2014	2015	2016	2017 अ	2014	2015	2016	2017 अ	2014	2015	2016	2017 अ
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
कंपनियों की संख्या	166	159	137	90	49	41	37	25	215	200	174	115
जमा	24	60	68	58	107	145	203	248	131	205	271	306
उधार	759	841	932	1,059	464	536	660	780	1,223	1,378	1,592	1,838
<b>कुल देयताएं/आस्तियां</b>	<b>1,020</b>	<b>1,172</b>	<b>1,313</b>	<b>1,471</b>	<b>714</b>	<b>847</b>	<b>1,077</b>	<b>1,283</b>	<b>1,734</b>	<b>2,019</b>	<b>2,390</b>	<b>2,754</b>
कुल अग्रिम	796	961	1,136	1,256	576	720	938	1,149	1,372	1,681	2,073	2,405
निवेश	52	59	49	56	18	25	36	69	70	85	86	125

अ.: अनंतिम.

टिप्पणी: निवेश कंपनियों को छोड़कर

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक, एनबीएफसी-डी की तिमाही विवरणी।

दूसरा, सभी एनबीएफसी-डी द्वारा स्वीकार किए जाने वाले जमा की सीमा में एकरूपता लाने के उद्देश्य से श्रेणीकृत एएफसी द्वारा जमा स्वीकार करने की सीमा उनकी निवल धारित आस्तियों के 4 गुना से कम करके 1.5 गुना कर दिया जाना। साख-पत्रों (एलसी) की जमा वृद्धि दर वर्ष 2016-17 में मंद पड़कर 22.2 प्रतिशत रही जबकि क्रेडिट का वित्तीयन करने के लिए उधार लिया जाना अधिक गति से बढ़ा। आस्तियों की दृष्टि से विचार करें तो ऋण, जो कि कुल आस्तियों का 87.3 प्रतिशत है, में वृद्धि-दर काफी अधिक रही, हालांकि पिछले वर्ष की तुलना में यह थोड़ी कम रही (सारणी VII.14)।

**एनबीएफसी-डी जमाराशियां**

VII.26 भारतीय रिजर्व बैंक ने 1997 से एनबीएफसी-डी हेतु कोई नया पंजीकरण प्रमाण-पत्र (सीओआर) जारी नहीं किया

है। इसने मार्च 2016 से एनबीएफसी-डी के लिए न्यूनतम निवेश ग्रेड रेटिंग को अनिवार्य बना दिया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि केवल सुदृढ़ और सुप्रबंधित प्रतिष्ठान ही जनता से जामाराशियां ले सकें। परिणाम यह हुआ कि एनबीएफसी-डी की संख्या घटने लगी और उनमें से कई तो जमाराशि न स्वीकार करने वाली एनबीएफसी बन गयीं। फलस्वरूप उनकी वृद्धि दर 2015-16 के 32.2 प्रतिशत की तुलना में घटकर 2016-17 में 12.9 प्रतिशत रह गयी (चार्ट VII.9ए)। इसी के अनुरूप, एनबीएफसी के सार्वजनिक जमा और अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के कुल जमा का अनुपात 2016-17 में थोड़ा कम हुआ जबकि इससे पहले के तीन वर्षों में इसमें वृद्धि दर्ज की गयी थी (चार्ट VII.9बी)।

**चार्ट VII.9ए: एनबीएफसी-डी के जनता की जमाराशियां**  
(मार्च के अंत में)



अ.: अनंतिम

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

**चार्ट VII.9बी: एससीबी की समग्र जमाराशियों के लिए एनबीएफसी-डी की जनता की जमाराशियों का अनुपात**  
(मार्च के अंत में)



अ.: अनंतिम

स्रोत: 1. भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

2. भारतीय अर्थ व्यवस्था के विषय में सांख्यिकी हैंडबुक, आरबीआई

### वित्तीय कार्यनिष्पादन

VII.27 एनबीएफसी-डी की आय 2016-17 में 12.3 प्रतिशत बढ़ गयी जबकि परिचालनगत खर्च बढ़ने और ब्याज भुगतान के चलते खर्च में 13.7 प्रतिशत की वृद्धि अपेक्षाकृत अधिक रही। परिणामस्वरूप, वर्ष के दौरान एनबीएफसी-डी के निवल लाभ में वृद्धि की दर संयमित रही (चार्ट VII.10)।

VII.28 सन 2013-14 से एनबीएफसी-डी का लागत-आय अनुपात बढ़ता रहा है जिससे परिचालनगत क्षमता में गिरावट का संकेत मिलता है। प्रतिस्पर्धी उधार-दर वाले वातावरण और ब्याज-दरों में गिरावट के रुख के चलते आयी आर्थिक मंदी के प्रभाव से हाल के वर्षों में उनके जोखिम प्रतिलाभ (आरओए) में भी कमी आयी है (सारणी VII.15)।

### सुदृढ़ता संकेतक

VII.29 सन 2010-11 से एनबीएफसी-डी के जीएनपीए में बढ़ोतरी का रुझान पाया गया, जो आर्थिक गतिविधि में मंदी और क्षेत्र विशेष के घटनाक्रमों, जैसे, परिवहन ऑपरेटरों एवं निर्माण के संबंध में आस्ति गुणवत्ता में गिरावट समेत कई कारकों को दर्शाता है। हाल की वृद्धि अंशतः बैंकों की तुलना में एनपीए संबंधी

### सारणी VII.15: एनबीएफसी-डी के वित्तीय अनुपात (मार्च के अंत में)

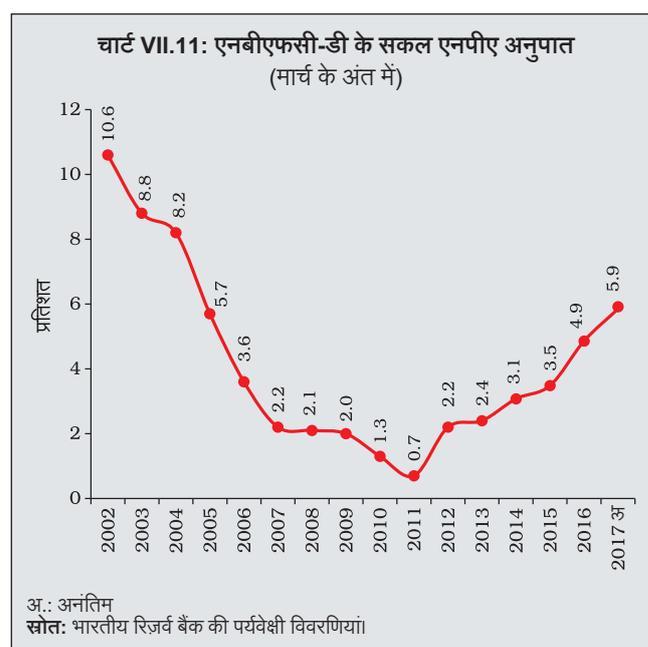
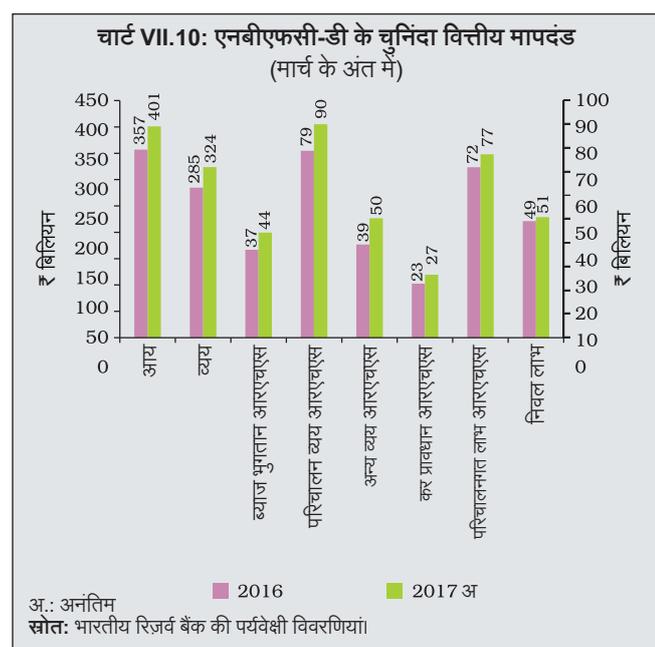
(कुल आस्तियों का प्रतिशत)\*

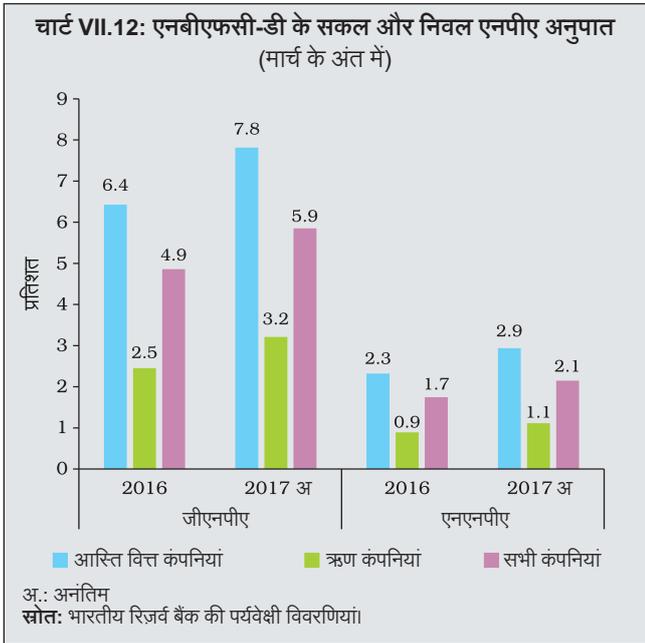
मदें	2014	2015	2016	2017 अ
1	2	3	4	5
1. आय	15.4	14.9	14.9	14.6
2. निधि आय	15.3	14.8	14.7	14.4
3. शुल्क आय	0.1	0.2	0.1	0.1
4. व्यय	11.8	11.6	11.9	11.8
5. वित्तीय व्यय	7.5	7.2	6.9	6.7
6. परिचालन व्यय	3.2	3.1	3.3	3.3
7. कर प्रावधान	1.1	1.0	0.9	1.0
8. निवल लाभ	2.5	2.3	2.0	1.8
9. आस्तियों पर प्रतिलाभ	2.5	2.3	2.1	1.9
10. आय-लागत अनुपात	76.6	77.9	79.8	80.7

अ.: अनंतिम  
#: मद 1 से 9 के लिए  
टिप्पणी: पूर्णांकन के कारण संख्याओं का योग असमान हो सकता है।  
स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

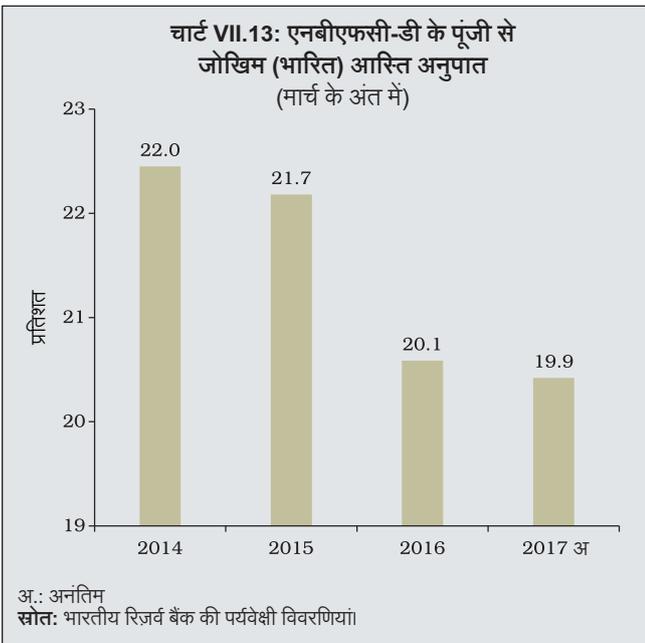
मानदंडों को क्रमिक रूप से सुसंगत बनाने की वजह से हुई (चार्ट VII.11)।

VII.30 वाणिज्यिक वाहन एवं ट्रैक्टर ऋणों के अंतर्गत एनपीए में वृद्धि रिपोर्ट की गई। श्रेणी-वार देखें तो पता चलता है कि एएफसी के मामले में गिरावट सुस्पष्ट थी, जिसका वाहन और ट्रैक्टर ऋणों में एक्सपोजर सर्वाधिक था (चार्ट VII.12)।





VII.31 सन 2013-14 से एनबीएफसी-डी का सीआरएआर घटता आ रहा है जिसकी वजह उनके ऋण पोर्टफोलियो में विस्तार के साथ-साथ आस्ति गुणवत्ता में गिरावट है (चार्ट VII.13)। इसके बावजूद, एनबीएफसी-डी का सीआरएआर 15 प्रतिशत के निर्धारित मानदंड से काफी अधिक था।



### अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनिया (आरएनबीसी)

VII.32 अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनियों (आरएनबीसी) का मुख्य कारोबार जमाराशि स्वीकार करना और उसका अभिनियोजन है, जैसा रिज़र्व बैंक द्वारा निर्दिष्ट है। मार्च 2015 को यथास्थिति, केवल दो आरएनबीसी रिज़र्व बैंक से पंजीकृत थे। सितंबर 2015 में, सहारा इंडिया फाइनेन्शियल कॉरपोरेशन लिमिटेड का पंजीकरण रद्द कर दिया गया। दोनों आरएनबीसी ने जमाराशि स्वीकार करना बंद कर दिया है और पुरानी जमाराशियों को चुकाने की प्रक्रिया में है।

VII.33 समग्र रूप से देखें तो, एनबीएफसी क्षेत्र के तुलन-पत्र में ऋण में मजबूत संवृद्धि की बढौलत विस्तार हुआ क्योंकि इससे बैंक-ऋण में गिरावट के चलते वित्तपोषण में आई कमी पूरी हुई। वर्ष के दौरान वाणिज्यिक स्थावर संपदा, उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं हेतु एवं सूक्ष्म और लघु उद्यमों को प्रदत्त ऋणों में काफी इजाफा हुआ। विनियामक पहलों के प्रतिक्रियास्वरूप जमाराशि संग्रहण में गिरावट आई। आस्ति गुणवत्ता में थोड़ी गिरावट आई, जो मुख्य रूप से बैंकिंग प्रणाली की तुलना में विनियमों को सुसंगत बनाने एवं विमुद्रीकरण के सामयिक प्रभाव की वजह से हुई। एनबीएफसी की पूंजी स्थिति 2016-17 में विनियामकीय न्यूनतम सीमा से अधिक रही, यद्यपि एक वर्ष पहले की तुलना में मामूली रूप से कम थी, जो आस्ति में हास को लेकर किए गए वर्धित प्रावधानों की वजह से हुई।

### III. भुगतान बैंक

VII.34 भारत में भुगतान बैंकों (पीबी) की स्थापना लघु व्यवसायों एवं निम्न आय वाले परिवारों के लिए गठित व्यापक वित्तीय सेवा समिति (अध्यक्ष: श्री नचीकेत मोर, 2014) की सिफारिशों के आधार पर की गई थी जिसका उद्देश्य वित्तीय समावेशन का विस्तार करना था और इसके लिए डिजिटल माध्यम का उपयोग करते हुए प्रवासी श्रमिकों, लघु व्यवसायों, निम्न आय वाले परिवारों एवं असंगठित क्षेत्र में आने वाले अन्य प्रतिष्ठनों को (i) लघु बचत खाता, एवं (ii) भुगतान/ विप्रेषण सेवा उपलब्ध करायी गई। पीबी को प्रति ग्राहक एक लाख रुपए से अधिक की मांग जमाराशियां स्वीकार करने की अनुमति दी गई; और उन्हें क्रेडिट कार्ड जारी करने या अनिवासी भारतीयों

**सारणी VII.16: भुगतान बैंकों की संक्षिप्त जानकारी**

स्तर	एयरटेल पीबी	भारतीय डाक पीबी	पेटीएम पीबी	फिनो पीबी	आदित्य बिडला आइडिया पीबी	एनएसडीएल पीबी	जियो पीबी
1	2	3	4	5	6	7	8
लाइसेंस जारी करने की तारीख	11-04-2016	20-01-2017	03-01-2017	30-03-2017	03-04-2017	30-03-2017	27-01-2017
परिचालन की शुरुआत करने की तारीख	23-11-2016	30-01-2017	23-05-2017	30-06-2017	परिचालन अभी भी शुरू होना है		

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक

(एनआरआई) से जमाराशियों को स्वीकार करने या उधार देने संबंधी कार्यकलापों से वर्जित किया गया था। इन बैंकों को निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (डीआईसीजीसी) से जमाराशि बीमा सुरक्षा प्राप्त है।

VII.35 रिज़र्व बैंक द्वारा पीबी को लाइसेंस जारी करने का काम 2015-16 में शुरू किया गया। अब तक, सात लाइसेंस जारी किए जा चुके हैं, जिनमें से दो बैंकों – एयरटेल पेमेन्ट्स बैंक एवं इंडिया पोस्ट पेमेन्ट्स बैंक – ने 31 मार्च 2017 से पहले परिचालन कार्य शुरू कर दिया था और अन्य दो – पेटीएम एवं फिनो – ने जून 2017 को समाप्त तिमाही तक परिचालन कार्य शुरू कर दिया था (सारणी VII.16)।

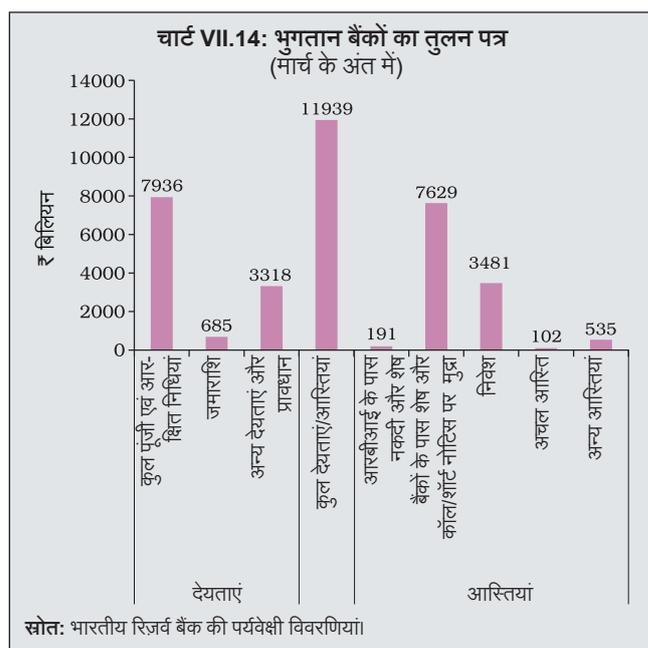
**तुलन-पत्र**

VII.36 मार्च 2017 के अंत में, परिचालन कर रहे दो भुगतान बैंकों की पूंजी एवं आरक्षित निधियां प्रमुख देयताएं साबित हुईं जिनकी जमाराशियां मात्र 5.7 प्रतिशत हैं। उनकी आस्तियों में दो-तिहाई हिस्सा बैंक के पास जमा शेष और मांग मुद्रा/अल्प सूचना पर मुद्रा का है, जबकि निवेश का हिस्सा एक-तिहाई है। आस्ति की संरचना उनके परिचालनों का स्वरूप दर्शाती है क्योंकि उन्हें उधार देने के कार्यकलापों की अनुमति नहीं है (चार्ट VII.14)।

**वित्तीय कार्यनिष्पादन**

VII.37 पीबी का कर-पश्चात लाभ और प्रावधान एवं कर-पूर्व अर्जन (ईबीपीटी) 2016-17 में ऋणात्मक था जो मुख्य रूप से उनके परिचालन कार्यों के प्रारंभिक चरणों में नए इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में भारी मात्रा में खर्च के कारण था (सारणी VII.17)।

VII.38 धनात्मक निवल ब्याज मार्जिन के बावजूद आस्तियों पर प्रतिलाभ एवं इक्विटी पर प्रतिफल ऋणात्मक थे जो प्रारंभिक व्यय के प्रभाव को दर्शाते हैं (सारणी VII.18)।



VII.39 पीबी के वित्तीय और परिचालनगत कार्यनिष्पादन का अधिक वास्तविक मूल्यांकन तब संभव होगा जब अधिक आंकड़े उपलब्ध होंगे और साथ ही जब ये बैंक अपने परिचालन कार्यों को बढ़ाएंगे।

**सारणी VII.17: भुगतान बैंकों के चुनिंदा वित्तीय मापदंड (मार्च 2017 के अंत में)**

(₹ मिलियन)

मदें	रकम
1	2
1. ब्याज आय	314
2. ब्याज व्यय	7
3. निवल ब्याज आय (1-2)	307
4. गैर-ब्याज आय	1,086
5. परिचालन व्यय	3,800
6. प्रावधान और कर पूर्व आय (3 + 4-5)	-2,407
7. जोखिम प्रावधान	4
8. कर प्रावधान	11
9. कर के बाद लाभ (6-7-8)	-2,422

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

**सारणी VII.18: भुगतान बैंकों के चुनिंदा वित्तीय अनुपात  
(मार्च 2017 के अंत में)**

(प्रतिशत)

मदें	आस्तियों पर प्रतिलाभ	इक्विटी पर प्रतिलाभ	कुल आस्तियों के लिए निवेश	निवल ब्याज मार्जिन	दक्षता (लागत आय अनुपात)	कार्यकारी निधियों के लिए परिचालन लाभ	लाभ मार्जिन
1	2	3	4	5	6	7	8
अनुपात	-25.2	-36.4	29.2	2.8	272.7	-25.1	-172.9

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

**IV. अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाएं**

VII.40 गैर-बैंक वित्तीय संस्थाओं की तीन बड़ी श्रेणियां हैं, जो इस प्रकार हैं, पहला, मीयादी-उधार संस्थाएं, जैसे, भारतीय निर्यात आयात बैंक (एक्विजम बैंक), जो, मीयादी ऋण और निवेश के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से उधार देने का कार्य करती हैं। दूसरा, ऐसी संस्थाएं जो मुख्य रूप से बैंकों और एनबीएफआई को पुनर्वित्त प्रदान करने का कार्य करती हैं, जैसे, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) एवं राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी)। तीसरा, निवेश संस्थाएं, जैसे, भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी), जो अपने धन को प्रधान रूप से बिक्री योग्य प्रतिभूतियों में लगाते हैं। राज्य/क्षेत्रीय स्तर की संस्थाएं दूसरा अलग समूह है जिसमें राज्य वित्तीय निगम (एसएफसी), राज्य औद्योगिक एवं विकास निगम (एसआईडीसी) एवं उत्तर-पूर्वी विकास वित्त निगम लिमिटेड (एनईडीएफआई) आते हैं।

VII.41 चार एआईएफआई रिज़र्व बैंक की निगरानी में हैं, जो इस प्रकार हैं, एक्विजम बैंक, नाबार्ड, एनएचबी और सिडबी (सारणी VII.19)।

**एआईएफआई<sup>3</sup> के परिचालन कार्य**

VII.42 वर्ष 2016-17 के दौरान एआईएफआई द्वारा संस्वीकृत वित्तीय सहायता में 15.7 प्रतिशत का इजाफा हुआ, जबकि उनका संवितरण 7.7 प्रतिशत की मामूली वृद्धि दर्शाता है और इसकी वजह मांग की स्थितियों में मंदी थी। विशेष रूप से, सिडबी के संवितरण में वर्ष के दौरान कमी आई, जो औद्योगिक गतिविधि में मंदी का संकेत देती है, जबकि एक्विजम बैंक के मामले में

**सारणी VII.19: एआईएफआई के स्वामित्व पैटर्न  
(मार्च 2017 के अंत में)**

संस्थान	मालिक	स्वामित्व शेयर (प्रतिशत)
1	2	3
एक्विजम बैंक	भारत सरकार	100.0
नाबार्ड	भारत सरकार भारतीय रिज़र्व बैंक	99.6 0.4
एनएचबी	भारतीय रिज़र्व बैंक	100.0
सिडबी*	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक बीमा कंपनियां वित्तीय संस्थाएं अन्य	61.6 18.5 4.5 15.4

\* स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (16.7 प्रतिशत), आईडीबीआई बैंक लिमिटेड (16.3 प्रतिशत) और भारत सरकार (15.4 प्रतिशत) सिडबी के तीन प्रमुख शेयरधारक हैं।

अशोध्य आस्तियों और प्रावधानीकरण संबंधी आवश्यकताओं के मद्देनजर डीलीवरेजिंग के कारण गिरावट पाई गई। नाबार्ड और एनएचबी के संवितरण में इजाफा कृषि और आवास क्षेत्रों में समुत्थानशीलता को दर्शाता है (सारणी VII.20) (परिशिष्ट सारणी VII.2)।

**सारणी VII.20: एआईएफआई द्वारा स्वीकृत और संवितरित की गई वित्तीय सहायता**

(₹ बिलियन)

श्रेणी	2015-16		2016-17 अ	
	स्वी.	संवि.	स्वी.	संवि.
1	2	3	4	5
सिडबी	561	559	406	395
नाबार्ड	1,695	1,582	2,401	1,977
एनएचबी	357	219	379	234
एक्विजम बैंक	753	552	709	531
<b>कुल</b>	<b>3,366</b>	<b>2,912</b>	<b>3,895</b>	<b>3,137</b>

अ.: अनंतिम, स्वी.: स्वीकृत, संवि.: संवितरण  
स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थान

<sup>3</sup> एक्विजम बैंक, सिडबी और नाबार्ड का वित्त वर्ष अप्रैल से मार्च तक है, और एनएचबी का जुलाई से जून तक है।

तुलन-पत्र

VII.43 सन 2016-17 के दौरान एआईएफआई के समेकित तुलन-पत्र में ऋण और अग्रिमों की बढ़ती वृद्धि हुई जिनकी आस्तियों में उनकी सर्वाधिक हिस्सेदारी है (सारणी VII.21)। इसके विपरीत निवेश में गिरावट आई जो जून 2017 में खजाना बिलों (टी-बिल) के मोचन की वजह से एनएचबी में भारी गिरावट दर्शाता है। विशेष रूप से, एआईएफआई की नकदी और बैंक में जमा शेष 2016-17 के अंत में गत वर्ष की अपेक्षा 30 प्रतिशत कम थे क्योंकि उन्होंने बैंकों के पास रखी अपनी मीयादी जमाराशियों को बजाय दुबारा शुरू करने के, जो वर्ष के अंत में परिपक्व हो गया था, सामान्य कारोबार में इस्तेमाल किया था। जमा संग्रहण में वृद्धि सामान्य थी जिसकी वजह से साल भर में कुल देयताओं में उसका हिस्सा घटा। दूसरी तरफ, उधारी के जरिए जुटाया गया धन वर्ष के दौरान काफी बढ़ा।

VII.44 एआईएफआई द्वारा जुटाए गए धन ने 2016-17 के दौरान जोर पकड़ा जिसके परिणामस्वरूप उनकी कुल सीमा (अम्ब्रेला लिमिट) का करीब-करीब 83 प्रतिशत इस्तेमाल किया

**सारणी VII.21: एआईएफआई का तुलन पत्र**

(राशि ₹ बिलियन में)

मर्दे	2015-16	2016-17	प्रतिशत अंतर
1	2	3	4
<b>देयताएं</b>			
1. पूंजी	136 (2.4)	155 (2.6)	14.0
2. आरक्षित निधियां	435 (7.8)	490 (8.1)	12.6
3. बॉन्ड्स और डिबेंचर	1,386 (24.7)	1,472 (24.4)	6.2
4. जमाराशियां	2,387 (42.5)	2,467 (40.9)	3.4
5. उधार	741 (13.2)	898 (14.9)	21.2
6. अन्य देयताएं	528 (9.4)	552 (9.1)	4.5
<b>कुल देयताएं/आस्तियां</b>	<b>5,613</b>	<b>6,034</b>	<b>7.5</b>
<b>आस्तियां</b>			
1. नकदी और बैंक शेष	273 (4.9)	193 (3.2)	-29.3
2. निवेश	422 (7.5)	408 (6.8)	-3.3
3. ऋण और अग्रिम	4,762 (84.8)	5,283 (87.6)	10.9
4. अन्य आस्तियां	157 (2.8)	150 (2.5)	-4.5

नोट: कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल देयताएं/आस्तियों के प्रतिशत हैं।  
स्रोत: लेखापरीक्षा किए गए ओएसएमओएस विवरणी।

गया, जो कि गत वर्ष 71 प्रतिशत था, और इसके लिए मुद्रा बाजार से धन जुटाया गया। सीपी के माध्यम से संग्रहण काफी बढ़ा, जो इन लिखतों की प्रतियोगी ब्याज दरों को दर्शाता है (सारणी VII.22)।

निधियों के स्रोत एवं उसका उपयोग

VII.45 वर्ष के दौरान, निधियों के आंतरिक स्रोतों के बढ़ने के साथ-साथ परिचालन कार्यों को आनुपातिक दरों से बढ़ाया गया और साथ ही पूंजी और आरक्षित निधि में इजाफा किया गया। बाह्य स्रोतों में मामूली वृद्धि हुई, जिसमें बाजार से जुटाए गए धन एवं सरकार द्वारा लगाई गई पूंजी शामिल हैं (सारणी VII.23)। वर्ष 2016-17 के दौरान धन का अभिनियोजन दर्शाता है कि निवेश को अत्यधिक पसंद किया गया और इस क्रम में दूसरी और तीसरी पसंद ताजा अभिनियोजन एवं विगत उधारियों की चुकौती हैं। वर्ष 2016-17 में निधियों के अभिनियोजन में ब्याज भुगतान का हिस्सा घटा।

उधार लेने और ऋण देने की परिपक्वता एवं लागत

VII.46 मौद्रिक नीति प्रयासों के तीव्र पारेषण से एआईएफआई द्वारा रुपया-संसाधनों की भारत औसत लागत (डब्ल्यूएसी) 2016-17 में और घट गई। एनएचबी और एक्विजम बैंक के मामले

**सारणी VII.22: मुद्रा बाजार से एआईएफआई द्वारा जुटाए गए संसाधन**

(मार्च के अंत में)#

(राशि ₹ बिलियन में)

लिखत	2015-16	2016-17
1	2	3
<b>ए. कुल</b>	<b>475</b>	<b>613</b>
i) मीयादी जमाराशियां	12	24
ii) टर्म मनी	15	22
iii) अंतर कॉर्पोरेट जमाराशियां	0	0
iv) जमा प्रमाणपत्र	139	125
v) वाणिज्यिक पत्र	308	442
मेमो		
बी. समावेशक सीमा	<b>672</b>	<b>742</b>
सी. समावेशक सीमा की उपयोगिता	<b>70.7</b>	<b>82.6</b>
(बी के प्रतिशत के रूप में)		

#:- एनएचबी के लिए अंत-जून टिप्पणी: एआईएफआई को समग्र 'समावेशक सीमा' के भीतर संसाधनों को जुटाने की अनुमति है, जो अपने नवीनतम लेखापरीक्षित तुलन पत्र के अनुसार संबंधित वित्तीय कंपनियों के निवल स्वाधिकृत निधि (एनओएफ) से जुड़ा हुआ है। समावेशक सीमा पांच लिखतों के लिए लागू होती है- सावधि जमा, टर्म मनी उधार, जमा प्रमाणपत्र (सीडी), वाणिज्यिक पत्र (सीपी) और अंतर-कॉर्पोरेट जमा।  
स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थान

**सारणी VII.23: एआईएफआई के स्रोत और निधियों के विनियोजन के स्वरूप**

(राशि ₹ बिलियन में)

मर्दे	2015-16	2016-17
1	2	3
<b>ए. निधि स्रोत</b>		
(i) आंतरिक	7,584 (60.7)	11,331 (67.2)
(ii) बाह्य	3,146 (25.2)	4,374 (26.0)
(iii) अन्य	1,754 (14.0)	1,148 (6.8)
<b>कुल</b>	<b>12,484</b> <b>(100)</b>	<b>16,853</b> <b>(100)</b>
<b>बी. निधियों का अभियोजन</b>		
(i) नवीन अभियोजन	2,706 (21.7)	3,175 (18.8)
(ii) पिछले उधार का पुनर्भुगतान	2,125 (17.0)	2,217 (13.2)
(iii) अन्य अभियोजन	7,653 (61.3)	11,460 (68.0)
जिनमें से: ब्याज भुगतान	253 (2.0)	296 (1.8)
<b>कुल</b>	<b>12,484</b> <b>(100)</b>	<b>16,853</b> <b>(100)</b>

\*: बैंकों और भारतीय रिजर्व बैंक की उपलब्ध नकद और शेष राशि शामिल हैं।  
नोट: कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल का प्रतिशत हैं।  
स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएँ।

में रुपया-संसाधनों की भारित औसत परिपक्वता (डब्ल्यूएएम) बढ़ी जबकि सिडबी और नाबार्ड के मामले में घट गई। रुपया-संसाधनों के डब्ल्यूएसी एक्विजम बैंक का सर्वाधिक था जबकि एनएचबी के मामले में डब्ल्यूएएम सर्वाधिक था (सारणी VII.24)।

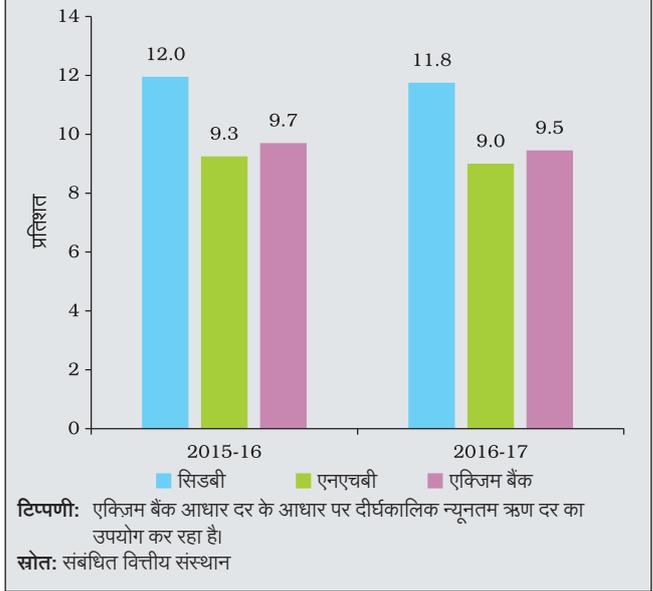
VII.47 सन 2016-17 में सभी एआईएफआई की दीर्घ-कालिक प्राइम उधार दर (पीएलआर) में गिरावट आई जो उधारकर्ताओं की निधि की लागत में कटौती को दर्शाता है। सिडबी और एनएचबी का पीएलआर क्रमशः सबसे अधिक और कम था (चार्ट VII.15)।

**सारणी VII.24: एआईएफआई द्वारा जुटाए गए रुपया संसाधनों की भारित औसत लागत और परिपक्वता**

संस्थान	भारित औसत लागत (प्रतिशत)		भारित औसत परिपक्वता (वर्ष)	
	2015-16	2016-17	2015-16	2016-17
1	2	3	4	5
1. सिडबी	7.55	6.54	1.13	0.51
2. नाबार्ड	8.41	7.89	2.27	1.78
3. एनएचबी	6.32	6.17	4.10	4.62
4. एक्विजम बैंक	8.69	8.12	3.33	3.55

स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थान

**चार्ट VII.15: चुनिंदा एआईएफआई की दीर्घकालिक पीएलआर संरचना**



**वित्तीय निष्पादन**

VII.48 वर्ष के दौरान एआईएफआई की आय में मामूली वृद्धि हुई, जो घटती ब्याज दरों, निम्नतर बैंक शेष एवं बिल डिस्काउंटिंग/रीडिस्काउंटिंग के अंतर्गत मंद गतिविधि के प्रभाव को आंशिक रूप से दर्शाता है। गैर-ब्याज आय में मजबूत वृद्धि हुई (सारणी VII.25)।

**सारणी VII.25: चुनिंदा एआईएफआई का वित्तीय कार्यनिष्पादन**  
(राशि ₹ बिलियन में)

मद	2015-16	2016-17	अंतर	
			राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5
<b>ए. आय</b>				
(ए) ब्याज आय	395 (97.6)	424 (96.5)	29	7.3
(बी) गैर ब्याज आय	9 (2.4)	15 (3.5)	6	66.7
<b>बी. व्यय</b>				
(ए) ब्याज व्यय	301 (92.6)	326 (91.3)	25	8.3
(बी) परिचालनगत व्यय	279 (7.3)	298 (8.7)	19	6.8
जिसमें से: मजदूरी का बिल	22	28	6	27.3
सी. कराधान के लिए प्रावधान	15	21	6	40.0
डी. लाभ	22	26	4	18.2
परिचालनगत लाभ	70	73	3	4.3
निवल लाभ	48	47	-1	-2.1

टिप्पणी: कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल आय/व्यय के प्रतिशत हैं।  
स्रोत: लेखापरीक्षित ओएसएमओएस विवरणियाँ।

**सारणी VII.26: एआईएफआई के वित्तीय अनुपात**  
(प्रतिशत)

वित्तीय अनुपात*	2015-16	2016-17
1	2	3
1. परिचालनगत लाभ	1.3	1.7
2. निवल लाभ	0.9	0.8
3. आय	7.5	7.4
4. ब्याज आय	7.3	7.1
5. अन्य आय	0.1	0.3
6. व्यय	5.7	5.7
7. ब्याज व्यय	5.3	5.2
8. अन्य परिचालनगत व्यय	0.4	0.5
9. मजदूरी बिल	0.3	0.4
10. प्रावधान	0.5	0.4

\*:- कुल औसत आस्तियों का प्रतिशत  
स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं

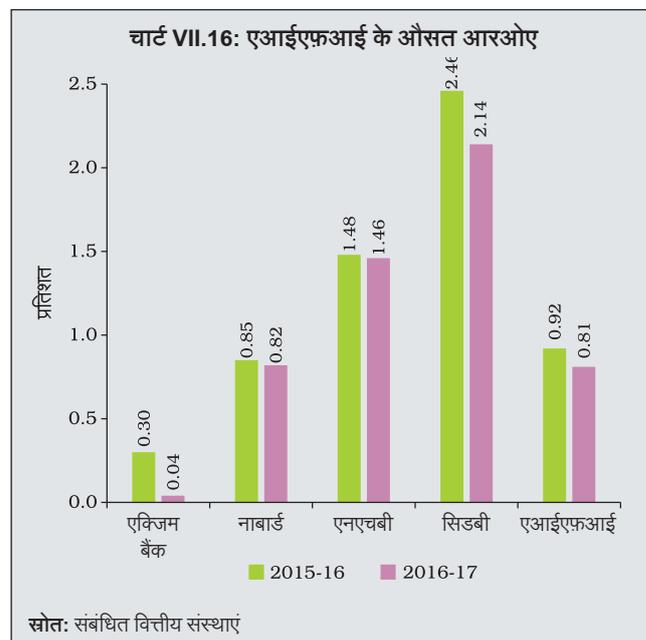
VII.49 यद्यपि, परिचालनगत लाभ अनुपात में सुधार हुआ, लेकिन मजदूरी बिल में अपेक्षाकृत उच्चतर वृद्धि ने निवल लाभ को संयमित कर दिया (सारणी VII.26)।

VII.50 सन 2016-17 में नाबार्ड का प्रति कर्मचारी निवल लाभ समान रहा जबकि सभी एआईएफआई में गिरावट आई। सिडबी का प्रति कर्मचारी निवल लाभ सर्वाधिक था जबकि एक्विज बैंक का सबसे कम (सारणी VII.27)। एनएचबी के सिवाय, एआईएफआई का परिचालनगत लाभ घटा, जो कार्यशील पूंजी के उपयोग में दक्षता की कमी को दर्शाता है। परिणामस्वरूप, 2016-17 के दौरान एआईएफआई का आरओए घटा, जबकि सिडबी का सर्वाधिक और एक्विज बैंक का सबसे कम था (चार्ट VII.16)।

**सारणी VII.27: एआईएफआई के चुनिंदा वित्तीय मापदंड**

संस्थान	ब्याज आय/ औसत कार्यकारी निधियां (प्रतिशत)		गैर-ब्याज आय/ औसत कार्यकारी निधियां (प्रतिशत)		परिचालन लाभ/ औसत कार्यकारी निधियां (प्रतिशत)		प्रति कर्मचारी निवल लाभ (₹ मिलियन)	
	2015-16	2016-17	2015-16	2016-17	2015-16	2016-17	2015-16	2016-17
1	2	3	4	5	6	7	8	9
एक्विज	7.8	7.3	0.5	0.7	2.4	2.1	9.7	1.2
नाबार्ड	6.9	6.8	0.1	0.1	1.3	1.2	6.0	6.0
एनएचबी	7.8	7.4	0.1	0.4	2.4	2.6	7.5	7.2
सिडबी	8.3	7.6	0.4	0.4	2.8	2.2	11.1	9.6

स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थान



सुदृढ़ता संकेतक

VII.51 सन 2016-17 के दौरान एआईएफआई के निवल एनपीए की कुल राशि बढ़ी जो एक्विज बैंक द्वारा प्रावधान कवरेज अनुपात (पीसीआर) में कटौती की वजह से हुई, भले ही अन्य एआईएफआई का निवल एनपीए वर्ष के दौरान घटा (सारणी VII.28)।

VII.52 एक्विज बैंक की वजह से 2016-17 के दौरान एआईएफआई की मानक आस्तियों का हिस्सा पुनः घट गया (सारणी VII.29)।

**सारणी VII.28: एआईएफआई के निवल एनपीए**  
(राशि ₹ बिलियन में)

संस्थान	निवल एनपीए		निवल एनपीए/निवल ऋण (प्रतिशत)	
	2015-16	2016-17	2015-16	2016-17
1	2	3	4	5
एक्विज बैंक	8.5	48.0	0.9	4.7
नाबार्ड	0.2	0.0	0.01	0.00
एनएचबी	0.3	0.0	0.3	0.00
सिडबी	4.8	3.0	0.7	0.4
<b>सभी वित्तीय संस्थान</b>	<b>14.1</b>	<b>51.0</b>	<b>0.3</b>	<b>1.0</b>

टिप्पणी: एक्विज बैंक, नाबार्ड और सिडबी के आंकड़े मार्च अंत से और एनएचबी के आंकड़े जून अंत से संबंधित हैं।  
स्रोत: संबंधित वित्तीय संस्थाएं

**सारणी VII.29: एआईएफआई का आस्ति वर्गीकरण**

(प्रतिशत)

श्रेणी	2015-16	2016-17
1	2	3
मानक	98.9	98.0
अवमानक	0.4	0.8
संदिग्ध	0.7	1.2
हानि	0.0	0.0
<b>कुल</b>	<b>100.0</b>	<b>100.0</b>

**टिप्पणी:** एक्विजि बैंक, नाबार्ड और सिडबी के आंकड़े मार्च अंत से और एनएचबी के आंकड़े जून अंत से संबंधित हैं।

**स्रोत:** संबंधित वित्तीय संस्थाएं

VII.53 समग्र स्तर पर एआईएफआई के सीआरएआर में सामान्य सुधार हुआ भले ही उनका सीआरएआर निर्धारित 9 प्रतिशत से अधिक था। संस्था-वार देखें तो पता चलता है कि साल भर में एक्विजि बैंक और नाबार्ड का सीआरएआर बेहतर हुआ जबकि दूसरों का सामान्य रूप से घटा (चार्ट VII.17)।

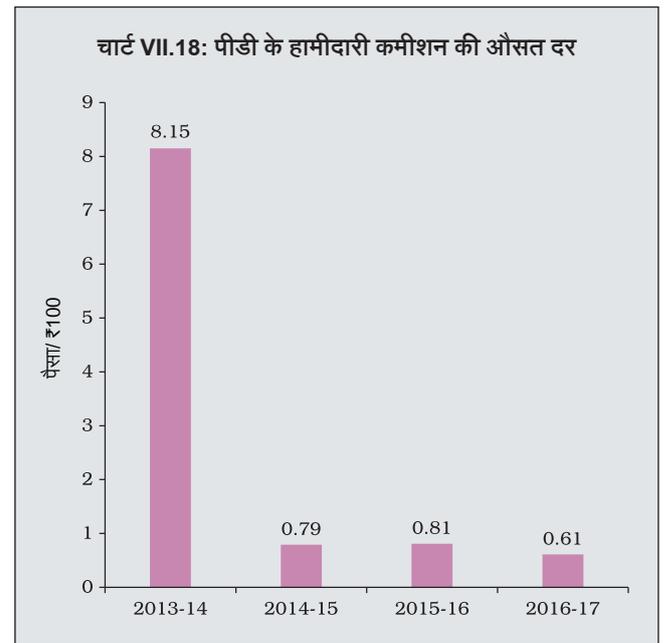
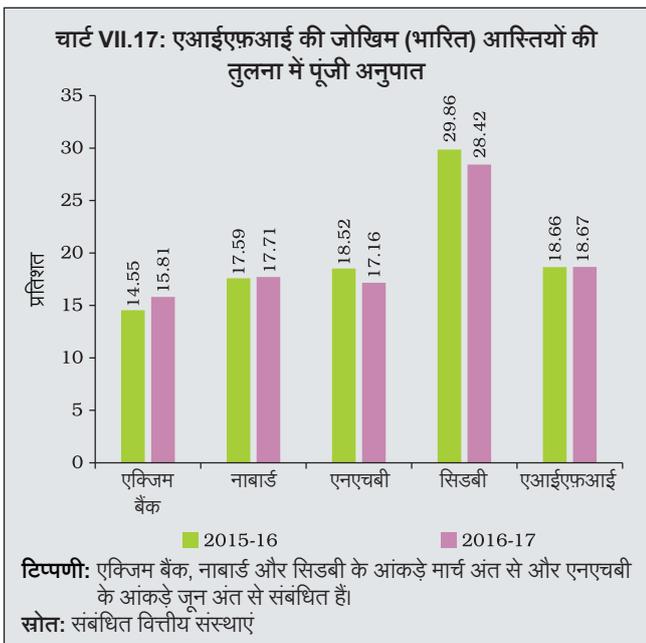
**V. प्राथमिक डीलर**

VII.54 दिनांक 31 मार्च 2017 की स्थिति के अनुसार, प्राथमिक डीलरों (पीडी) की संख्या 21 थीं, जिनमें से 14 बैंकों की देखरेख में परिचालन कर रहे हैं और सात स्टैंडअलोन पीडी हैं, जो आरबीआई अधिनियम, 1934 की धारा 45-झक के तहत बतौर एनबीएफसी पंजीकृत थे।

**पीडी के परिचालन एवं कार्य-निष्पादन**

VII.55 पीडी का अनिवार्य कर्तव्य है कि वे हामीदारी एवं सरकारी दिनांकित प्रतिभूतियों की नीलामियों में भाग लें। उनके लिए यह भी अनिवार्य है कि वे ट्रेजरी-बिलों और नकदी प्रबंधन बिलों (सीएमबी) की प्राथमिक नीलामियों में 40 प्रतिशत का न्यूनतम अनुपात प्राप्त करने में सफल (बोली प्रतिबद्धता की तुलना में स्वीकृत बोलियां) हों, जिसका आकलन अर्ध-वार्षिक आधार पर किया जाता है।

VII.56 सन 2016-17 के दौरान, सरकार द्वारा ₹5,820 बिलियन की दिनांकित प्रतिभूतियों की नीलामी की गई, जो गत वर्ष के ₹5,850 बिलियन की अपेक्षा मामूली रूप से कम थी। दिनांकित प्रतिभूतियों के प्राथमिक निर्गमन में पीडी के सब्सक्रिप्शन का हिस्सा 2016-17 के दौरान घट गया। वर्ष 2016-17 के दौरान ₹53 बिलियन के लिए आंशिक हस्तांतरण के चार दृष्टांत पाए गए, जबकि 2015-16 में ₹110 बिलियन के लिए सात दृष्टांत पाए गए। वर्ष 2016-17 के दौरान पीडी को प्रदत्त हामीदारी कमीशन ₹356.6 मिलियन था जो गत वर्ष के ₹470.9 मिलियन से कम था। सन 2016-17 में हामीदारी कमीशन की औसत दर वर्ष-दर-वर्ष आधार पर घटती गई, वर्ष के दौरान हस्तांतरण में की गई कटौती की वजह से हुई (चार्ट VII.18)।



VII.57 ट्रेजरी-बिलों एवं सीएमबी की नीलामियों के संबंध में, सभी पीडी निर्धारित न्यूनतम सफल अनुपात हासिल कर पाए। पीडी ने 2016-17 में उच्चतर बोली लगाई (अपनी बोली प्रतिबद्धताओं के सापेक्षता); ट्रेजरी-बिलों/सीएमबी में उनका अभिदान विगत वर्ष के 75 प्रतिशत से मामूली सा घटकर 74 प्रतिशत रहा (सारणी VII.30)।

VII.58 द्वितीयक बाजार में 2016-17 के दौरान सभी 21 पीडी ने अकेले ही सरकारी प्रतिभूतियों में 5 गुना और ट्रेजरी-बिलों में 10 गुना आवश्यक न्यूनतम वार्षिक कुल टर्नओवर (एकमुश्त और रिपो लेनदेन) और साथ ही जी-सेक में 3 गुना और टी-बिलों में 6 गुना न्यूनतम वार्षिक एकमुश्त टर्नओवर हासिल किया।

#### स्टैंडअलोन पीडी के कार्य-निष्पादन

VII.62 स्टैंडअलोन प्राथमिक डीलरों (एसपीडी) की मात्रा द्वितीयक बाजार में 2015-16 की तुलना में वर्ष 2016-17 में 22.6 प्रतिशत बढ़ी। अभी भी, साल भर में कुल बाजार टर्नओवर में उनका हिस्सा घटा जो अंशतः सरकारी उधारियों में कटौती की वजह से हुई (सारणी VII.31)।

**सारणी VII.30: प्राथमिक बाजार में पीडी के कार्यनिष्पादन**  
(राशि ₹ बिलियन में)

मर्दे	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
1	2	3	4	5
<b>खजाना बिल एवं सीएमबी</b>				
(ए) बोली लगाने की प्रतिबद्धता	8,299	8,671	8,833	8,340
(बी) लगाई गई वास्तविक बोली	17,994	19,512	25,020	32,365
(सी) अनुपात को कवर करने के लिए बोली	2.6	2.7	3.5	3.9
(डी) स्वीकार की गई बोलियां	4,990	5,657	5,460	4,946
(ई) सफलता अनुपात (डी)/(ए) (प्रतिशत)	60.1	65.2	61.8	59.3
<b>केंद्र सरकार की दिनांकित प्रतिभूतियां</b>				
(एफ) अधिसूचित राशि	5,570	5,920	5,850	5,820
(जी) लगाई गई वास्तविक बोली	8,861	10,830	12,151	12,573
(एच) अनुपात को कवर करने के लिए बोली	1.6	1.8	2.1	2.2
(i) पीडी की स्वीकार की गई बोली	2,576	3,012	3,148	2,763
(j) पीडी का हिस्सा (डी)/(एफ) (प्रतिशत)	46.3	50.9	53.8	47.5
<b>स्रोत:</b> पीडी द्वारा फाइल की गई विवरणियां।				

**सारणी VII.31: सरकारी प्रतिभूति (जी-सेक) के द्वितीयक बाजार में एसपीडी का कार्यनिष्पादन**  
(राशि ₹ बिलियन में)

मर्दे	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
1	2	3	4	5
<b>एकमुश्त</b>				
एसपीडी का टर्नओवर	31.914	37.943	33.021	52.365
मार्केट टर्नओवर	89.567	101.561	97.285	168.741
एसपीडी का हिस्सा (प्रतिशत)	35.6	37.4	33.9	31.0
<b>रेपो</b>				
एसपीडी का टर्नओवर	19.744	28.198	39.558	36.586
मार्केट टर्नओवर	72.281	78.752	86.217	118.350
एसपीडी का हिस्सा (प्रतिशत)	27.3	35.8	45.9	30.9
<b>कुल (एकमुश्त + रेपो)</b>				
एसपीडी का टर्नओवर	51.658	66.141	72.579	88.951
मार्केट टर्नओवर	161.848	180.314	183.502	287.091
एसपीडी का हिस्सा (प्रतिशत)	31.9	36.7	39.5	31.0
<b>टिप्पणी:</b> 1. एकमुश्त और रेपो ट्रेड्स के लिए बाजार सहभागियों के लिए कुल टर्नओवर में एक पक्ष मात्रा यानि क्रय अथवा विक्रय शामिल है। 2. एकमुश्त एवं रेपो ट्रेड्स हेतु स्टैंडअलोन पीडी के लिए कुल टर्नओवर में द्विपक्षीय मात्रा यानि क्रय + विक्रय शामिल है। 3. रेपो के मामले में सिर्फ पहले चरण को एसपीडी का टर्नओवर माना जाता है। 4. दोनों एकमुश्त और रेपो वॉल्यूम के लिए मार्केट टर्नओवर में स्टैंडअलोन पीडी टर्नओवर भी शामिल है। <b>स्रोत:</b> भारतीय समाशोधन निगम लिमिटेड।				

#### एसपीडी की निधियों के स्रोत एवं प्रयोग

VII.63 सन 2016-17 के दौरान एसपीडी द्वारा जुटाई गई निधि में लगभग 18.5 प्रतिशत की गिरावट आई जो मुख्य रूप से बाजार रेपो का कम सहारा लेने की वजह से हुई। तथापि, उधारी उनकी निधि का प्रमुख स्रोत बना रहा, जिसका निधि के कुल स्रोत में 83.7 प्रतिशत हिस्सा था, जो गत वर्ष के अंत में 88.1 प्रतिशत था। अप्रतिभूत ऋणों में वर्ष के दौरान वृद्धि हुई जो दर्शाता है कि मांग मुद्रा बाजार का अधिकाधिक सहारा लिया गया। जुटाई गई निधि में गिरावट आई, जो 2016-17 के दौरान चालू आस्तियों में आई कमी को दर्शाता है, जिसका कारण वर्ष की अंतिम तिमाही में सरकार द्वारा बाजार से कम उधार लेना था (सारणी VII.32)।

#### एसपीडी के वित्तीय निष्पादन

VII.61 एसपीडी के कर पश्चात लाभ में 2016-17 में प्रतिफलों के अनुकूल होने के कारण काफी वृद्धि हुई। जिसके अंतर्गत सभी सात एसपीडी ने पिछले वर्ष के तुलना में अधिक प्रतिफल दर्ज किया (परिशिष्ट सारणी VII.3)। उनकी आय में वृद्धि कारोबारी

**सारणी VII.32: एसपीडी के निधि स्रोत और उनका अनुप्रयोग**

(राशि ₹ बिलियन में)

मदें	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	प्रतिशत अंतर	
					2014-15 की तुलना में 2015-16	2015-16 की तुलना में 2016-17
1	2	3	4	5	6	7
<b>निधि स्रोत</b>						
1. पूंजी	16	15	15	15	0.0	0.0
2. आरक्षित और अधिशेष निधियां	28	30	31	36	3.3	16.1
3. ऋण (ए + बी)	196	285	338	261	18.6	-22.8
(ए) जमानती	149	231	248	154	7.4	-37.9
(बी) गैर-जमानती	47	54	90	107	66.7	18.9
<b>कुल</b>	<b>239</b>	<b>330</b>	<b>383</b>	<b>312</b>	<b>16.1</b>	<b>-18.5</b>
<b>निधियों का अनुप्रयोग</b>						
1. स्थायी आस्तियां	0.3	0.3	0.3	0.4	0.0	33.3
2. एचटीएम निवेश (ए + बी)	26	14	20	15	42.9	-25.0
(ए) सरकारी प्रतिभूतियां	26	14	20	15	42.9	-25.0
(बी) अन्य	0.03	0.03	0.02	0.02	-33.3	0.0
3. वर्तमान आस्तियां	235	326	432	318	32.5	-26.4
4. ऋण और अग्रिम	5	8	8	10	0.0	25.0
5. वर्तमान देयताएं	-28	-18	-77	-31	327.8	-59.7
6. आस्थगित कर	0.08	0.08	0.03	-0.31	-62.5	-1133.3
7. अन्य	0.00	0.00	0.00	-0.06	-	-
<b>कुल</b>	<b>239</b>	<b>330</b>	<b>383</b>	<b>312</b>	<b>16.1</b>	<b>-18.5</b>

स्रोत: पीडी द्वारा प्रस्तुत विवरणियां।

लाभों में काफी बढ़ोत्तरी होने और उनके व्ययों में थोड़ी गिरावट दर्ज होने के कारण हुई (सारणी VII.33)।

वृद्धि परिचालनात्मक दक्षता का द्योतक है। इन पीडी के लागत-आय अनुपात में भी सुधार आया (सारणी VII.34)।

VII.62 करोत्तर लाभ (पीएटी) में बढ़ोत्तरी के अनुरूप, 2016-17 में एसपीडी की निवल मालियत पर प्रतिलाभ में वृद्धि हुई। यह

VII.63 स्वतंत्र पीडी के समग्र सीआरएआर में 2016-17 के दौरान वृद्धि हुई और यह 15 प्रतिशत के विनियामकीय

**सारणी VII.33: एसपीडी का वित्तीय कार्यनिष्पादन**

(राशि ₹ बिलियन में)

मदें	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	भिन्नता			
					2015-16 over 2014-15		2016-17 over 2015-16	
					राशि	प्रतिशत	राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7	8	9
ए. आय (i से iii)	28	32	30	42	-2	-6.3	12	40.0
(i) ब्याज और छूट	20	24	27	27	2	12.5	1	0.0
(ii) ट्रेडिंग लाभ	6	8	3	14	-5	-62.5	11	366.7
(iii) अन्य आय	2	1	1	1	0	0.0	0	0.0
बी. व्यय (i से ii)	19	23	25	24	2	8.7	0	-4.0
(i) ब्याज	17	20	22	21	2	10.0	-1	-4.5
(ii) स्थापना और प्रशासनिक लागत समेत अन्य खर्च	2	3	3	3	0	0.0	0	0.0
सी. कर पूर्व लाभ	4	9	5	18	-4	-44.4	13	260.0
डी. कर के बाद लाभ	6	6	3	12	-3	-50.0	8	300.0

टिप्पणी: पूर्णांकित किए जाने के कारण आंकड़ों का योग भिन्न हो सकता है।

स्रोत: पीडी द्वारा प्रस्तुत विवरणियां।

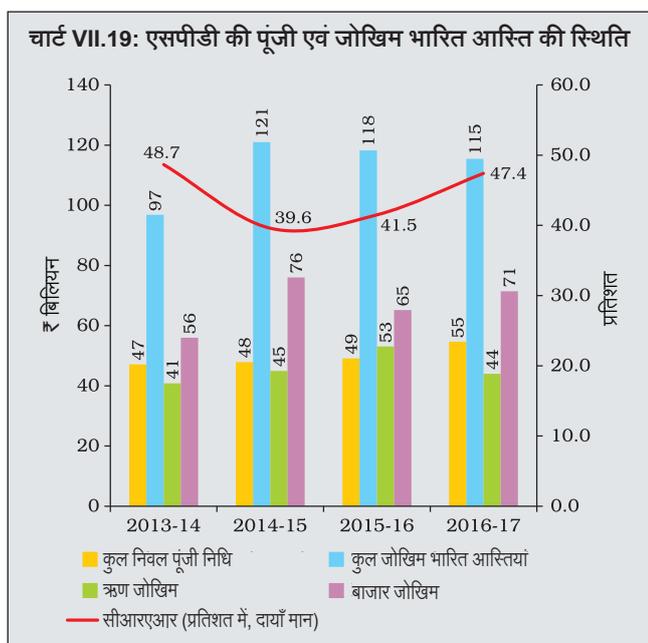
**सारणी VII.34: एसपीडी के वित्तीय संकेतक**

(राशि ₹ बिलियन में)

संकेतक	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
1	2	3	4	5
i) शुद्ध लाभ	6	6	3	12
ii) औसत आस्तियां	291	359	413	444
iii) औसत आस्ति पर प्रतिलाभ (प्रतिशत)	1.9	1.7	0.8	2.6
iv) निवल मालियत पर प्रतिलाभ	13.0	13.6	7.5	22.8
v) लागत-आय अनुपात	22.7	21.5	33.3	16.3

निर्धारित स्तर से उच्च स्तर पर बनी रही (चार्ट VII.19) (परिशिष्ट सारणी VII.4)।

VII.64 दिनांकित प्रतिभूतियों के प्राथमिक निर्गमन की सदस्यता में पीडी की हिस्सेदारी में 2016-17 में कमी आई। यह गिरावट सरकारी उधार में कमी और बैंक ऋण के अपेक्षाकृत कम उठाव के बीच न्यूनतर सुपुर्दगी और बाजार के अन्य प्रतिभागियों की वर्धित प्रवृत्तियों के कारण हुई। पीडी को अदा किए गए औसत हामीदारी शुल्क में भी वर्ष के दौरान गिरावट आई। बाजार के कुल टर्नओवर में एसपीडी की हिस्सेदारी में गिरावट आने के बावजूद कारोबारी लाभों के अपेक्षाकृत अधिक रहनेके कारण 2016-17 में उनके निवल लाभ में सुधार हुआ।



**VII. हाल की गतिविधियां**

VII.65 इस खंड में अप्रैल-सितंबर 2017<sup>4</sup> के दौरान एनबीएफआई क्षेत्र की गतिविधियों की चर्चा की गई है। इस अवधि से संबंधित आंकड़ों की सीमित उपलब्धता के मद्देनजर चर्चा में चुनिंदा चरों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

**एनबीएफसी क्षेत्र**

VII.66 उच्चतर उधारियों के माध्यम से वित्तपोषित मजबूत ऋण वृद्धि के कारण 2017-18 की पहली छमाही में एनबीएफसी के समेकित तुलन-पत्र में विस्तार हुआ (सारणी VII.35)।

VII.67 अप्रैल-सितंबर 2017 के दौरान एनबीएफसी की ऋण वृद्धि विगत वर्ष में हुई वृद्धि की तुलना में लगभग सात प्रतिशतता अंक अधिक थी, जिसका कारण खुदरा और सेवा क्षेत्रों से मिला सहयोग रहा (चार्ट VII.20)।

VII.68 एनबीएफसी-एनडी-एसआई खंड द्वारा प्रदान किए गए ऋण के समूह-विच्छेदन से पता चलता है कि ऋण प्रदान करने वाली कंपनियों द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाले ऋण में तीव्र वृद्धि हुई, वृद्धि के क्रम में इनके बाद आस्ति प्रबंध कंपनियों और निवेश कंपनियों का स्थान रहा है। ऋण प्रदान करने वाली कंपनियों का वाणिज्यिक स्थावर संपदा में अपेक्षाकृत बड़ा एक्सपोजर है, जिसके ऋण में तीव्र वृद्धि देखी गई। यह वृद्धि अर्थव्यवस्था की बहाली को दर्शाती है। दूसरी तरफ इस क्षेत्र में आस्ति गुणवत्ता संबंधी चिन्ताओं के बीच 2017-18 की पहली छमाही के दौरान एनबीएफसी-आईएफसी की क्रेडिट संवृद्धि में नरमी रही। सन

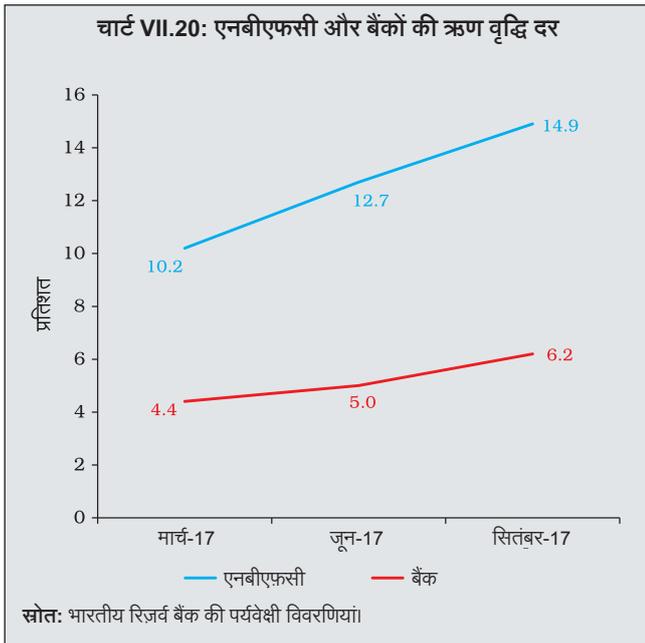
**सारणी VII.35: गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का संक्षिप्त तुलन पत्र**

(राशि ₹ बिलियन में)

मद्दे	सितंबर-अंत, 2017	वर्ष-दर-वर्ष अंतर (सितंबर तक)		वित्तीय वर्ष अंतर (अप्रैल-सितंबर)	
		2016-17	2017-18	2016-17	2017-18
1	2	3	4	5	6
1. उधार	14,739	5.1	4.9	12.8	4.9
2. ऋण एवं अग्रिम	15,821	7.6	14.9	13.5	7.3
3. कुल आस्तियां/देयताएं	20,631	7.8	6.5	13.9	4.6

**स्रोत:** भारतीय रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

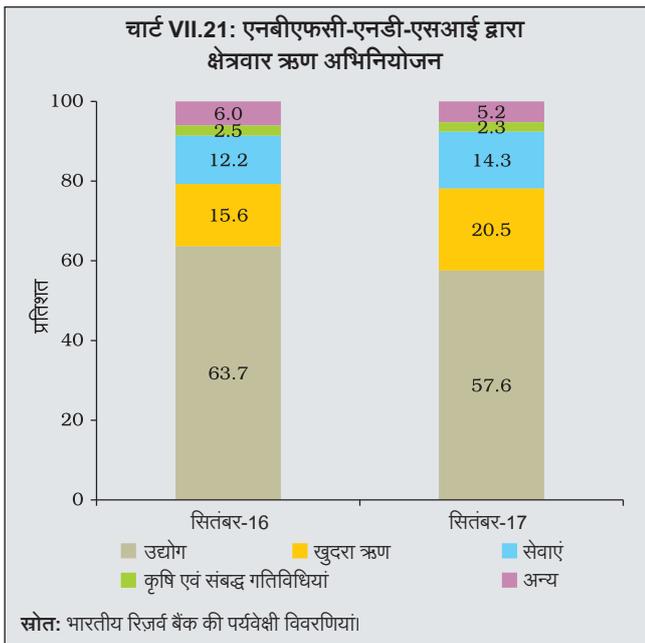
<sup>4</sup> यह विश्लेषण 310 कंपनियों के अप्रैल-सितंबर 2017 से संबंधित अनंतिम आंकड़ों पर आधारित है।



2017-18 की पहली छमाही के दौरान खुदरा और सेवा क्षेत्र के हिस्सों में सुधार हुआ (चार्ट VII.21)।

एनबीएफसी-एनडी-एसआई की ऋण दरें

VII.69 एनबीएफसी-एनडी-एसआई की भारित औसत ऋण दरों (डब्ल्यूएलआर) में कमी होती रही है। यह कमी एनबीएफसी-एमएफआई को छोड़कर सभी श्रेणियों के मौद्रिक सुगमता चक्र के अनुरूप रही है जो डब्ल्यूएलआर में थोड़ी वृद्धि को दर्शाता है (सारणी VII.36)।



**सारणी VII.36: एनबीएफसी-एनडी-एसआई के विभिन्न श्रेणियों की भारित औसत ऋण दर**

(प्रतिशत)

श्रेणियाँ	दिसं-15	मार्च-16	जून-16	सितं-16	दिसं-16	मार्च-17	जून-17	सितं-17
1	2	3	4	5	6	7	8	9
बुनियादी ढांचा वित्त कंपनियाँ	12.3	12.1	12.0	12.0	12.0	11.6	11.4	11.1
ऋण कंपनियाँ	14.3	13.9	14.7	14.3	14.1	13.9	13.1	11.5
आस्तित्व वित्त कंपनियाँ	13.6	13.5	13.5	13.2	13.0	12.8	12.6	12.4
निवेश कंपनियाँ	11.9	13.5	12.6	11.6	11.4	12.4	11.5	10.2
एनबीएफसी-एमएफआई	19.0	20.6	22.4	22.1	20.5	21.1	20.5	21.3
<b>एनबीएफसी-एनडी-एसआई</b>	<b>13.6</b>	<b>13.2</b>	<b>14.1</b>	<b>13.7</b>	<b>13.4</b>	<b>13.2</b>	<b>11.9</b>	<b>11.6</b>

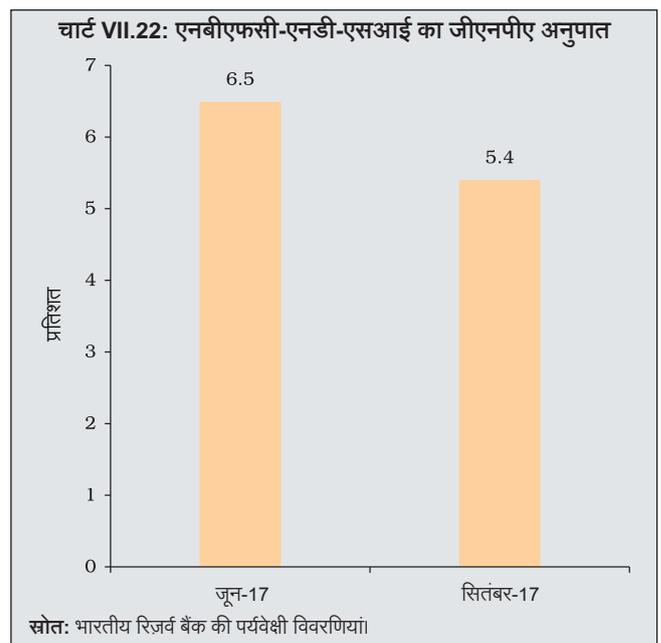
**टिप्पणी:** एनबीएफसी-एनडी-एसआई के बीच क्रेडिट अभिनियोजन में कोर निवेश कंपनियों, एनबीएफसी-फैक्टर और एनबीएफसी-आईडीएफ का नगण्य हिस्सा है।

**स्रोत:** भारतीय रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

VII.70 एनबीएफसी-एनडी-एसआई की अनर्जक आस्तियों में जून 2017 को समाप्त तिमाही में थोड़ी गिरावट दर्ज हुई थी, किंतु सितंबर 2017 को समाप्त तिमाही में इसमें थोड़ा सुधार हुआ। यह घटना आंशिक रूप से अधिक आस्तियों के बढ़ते खाते डाले जाने को दर्शाती है (चार्ट VII.22)।

भुगतान बैंक

VII.71 भुगतान बैंकों में एयरटेल पीबी अपने डिजिटल प्लेटफॉर्म में एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यूपीआई) का प्रयोग करने वाला



भारत का पहला भुगतान बैंक बन गया। जियो भुगतान बैंक, जो रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) और भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) का साझा उपक्रम है, के परिचालन दिसंबर 2017 से प्रारंभ होने की संभावना है। ग्रामीण लोगों तक पहुंचने के अपने प्रयास के तहत भारत सरकार भारतीय डाक भुगतान

बैंकों की शाखाओं को विस्तार देने के लिए कार्य कर रही है। इन गतिविधियों से देश में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में भुगतान बैंकों की अंतर्निहित क्षमता का संकेत मिलता है। समय के साथ पी2पी उधार देने और खाता समूहन में लगी एनबीएफसी के नए वर्ग भी सामने आना संभावित है (बॉक्स VII.2)।

### बॉक्स VII.2: खाता समूहक : विभिन्न देशों में इनका विश्लेषण

खाता समूहक (एए) वह संस्था होती है जो ग्राहक की वित्तीय आस्तियों से संबंधित सूचना उनके धारकों से पुनः प्राप्त करते हैं या उन्हें एकत्र करते हैं और ग्राहक या ग्राहक द्वारा विनिर्दिष्ट अन्य प्रयोग कर्ताओं को समेकित सूचना उपलब्ध कराती है। रिजर्व बैंक द्वारा सितंबर 2016 में जारी किए गए दिशानिर्देशों के अनुसार, एनबीएफसी-एए को ग्राहकों द्वारा किए जाने वाले लेनदेन में अन्य किसी भी प्रकार की गतिविधि करने या खाता समूहन का कार्य करने के लिए तृतीय पक्ष सेवा प्रदाता की सेवाएं लेने की मनाही है। खाता समूहकों की उपयोगिता पर रिजर्व बैंक की वार्षिक रिपोर्ट 2015-16 (पृ. 73) में चर्चा की गई थी। भारत में एप्लीकेशन प्रोग्राम इंटरफेस (एपीआई) पर आधारित वित्तीय आंकड़ों के समूहन के रूप में परफिओज जैसी कंपनियों द्वारा कुछ इसी तरह की सेवाएं पहले से उपलब्ध कराई जा रही हैं।

खाता समूहन की शुरुआत 1999 में संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएसए) में वर्टिकल वन द्वारा की गई, जिसका बाद में योडली में विलय हो गया। इस खंड में कारोबारी गतिविधि का विकास तभी से हो रहा है (एएसआईसी, 2001 और फुजी, एवं अन्य, 2002)। इस संदर्भ में, यह बात रोचक है कि विभिन्न देशों में अपनाए जा रहे निर्धारित विनियामकीय ढांचों और कारोबारी मॉडलों में अंतर है।

वित्तीय आंकड़ों का उपभोक्ता द्वारा प्राधिकृत उपयोग (सीएफपीबी, 2017) सुनिश्चित करने के लिए अमेरिका में उपभोक्त वित्तीय संरक्षण ब्यूरो ने अक्टूबर 2017 में उपभोक्ता संरक्षण सिद्धांतों का सेट जारी किया। कनाडा में, वित्तीय संस्थान और स्वतंत्र कंपनियां समूहन सेवाएं उपलब्ध कराती हैं। उनकी गतिविधियां विभिन्न विनियमों के अंतर्गत आती हैं और समूहन गतिविधि के लिए कोई विशिष्ट विनियम नहीं है (गेंट्जोग्लानिस, एवं अन्य 2014)। 2010 में, हांगकांग मौद्रिक प्राधिकारी ने लेख समूहन सेवाएं (एचकेएमए, 2010) प्रदान करने वाले संस्थानों द्वारा अनुपालन हेतु सिद्धांतों एवं जोखिम प्रबंधन नियंत्रण उपाय निर्धारित किए और उन्हें स्थापित किया।

खाता समूहन के लिए व्यापकरूप से दो अलग-अलग प्रौद्योगिकियों का प्रयोग किया जाता है - स्क्रीन-स्क्रेपिंग एवं डायरेक्ट डाटा फीड। स्क्रीन स्क्रेपिंग में समूहक स्वयं ग्राहक द्वारा खाता समूहक से साझा किए गए ग्राहक के यूजर नेम और पासवर्ड का उपयोग करते हुए सूचना एकत्र करते हैं। दूसरी ओर, डायरेक्ट डाटा फीड के अंतर्गत खाता समूहक, वित्तीय संस्थान और ग्राहक के बीच त्रिपक्षीय समझौता किया जाता है। वित्तीय संस्थान द्वारा खाता समूहक को खाता संबंधी जानकारी मानकीकृत प्रपत्र (एएसआईसी 2001) में उपलब्ध कराई जाती है।

अमेरिका में, समूहकों का परिचालन आमतौर पर बैंकों, बैंकों के अभिकर्ताओं, संपत्ति प्रबंधकों एवं योडली जैसी सॉफ्टवेयर कंपनियों द्वारा किया जाता है। समूहक, ग्राहकों को उनके व्यय एवं बचत पैटर्न पर नजर रखने और बिलों तथा भुगतानों का प्रबंध करने की अनुमति प्रदान करता है। ग्राहकों के लिए नए उत्पादों और सेवाओं की अनुशंसा करने हेतु समूहक वित्तीय आंकड़ों का विश्लेषण भी करते हैं (सीएमए, 2016)। -

यूके में, सिटी बैंक, एग एंड मनी सुपरमार्केट ने खाता समूहन सेवा की शुरुआत 2000 के प्रारंभ में की थी। वे बैंकिंग, क्रेडिट कार्ड, निवेशों, उपयोगी सेवाओं, संचार, यात्रा, खरीददारी एवं रिवाइज की सूचना उपलब्ध कराते थे। प्रारंभ में, वे स्क्रीन स्क्रेपिंग विधि का प्रयोग करते थे और बाद में डायरेक्ट डाटा फीड्स का प्रयोग करने लगे।

कनाडा में, खाता समूहन सेवाएं विदेशी फर्मों की अनुषंगियों, यथा मिन्ट के अलावा बैंकों, द्वारा उपलब्ध कराई जाती हैं (गेंट्जोग्लानिस, और अन्य, 2014)। वे फर्म मुख्यरूप से एपीआई-आधारित प्रमाणीकरण, खाते से होने वाले लेनदेन (निजी या कारोबारी) तथा जमा शेष राशि सत्यापन सेवाएं प्रदान करते हैं। जापान में समूहन सेवाओं का विकास आढ़तिया फर्मों एवं नोमुरा अनुसंधान संस्थान के सानिध्य में हुआ तथा मॉनेक्स ने 2001 में इन सेवाओं (एप्लीकेशन सर्विस इंप्लीमेंटेशन टाइप) की शुरुआत की। हांगकांग में, खाता समूहन सेवाएं सिर्फ प्राधिकृत संस्थान; संबद्ध बैंकिंग संस्थानों सहित, जिनके अंतर्गत उनकी विदेशी शाखाएं, स्थानीय या विदेशी अनुषंगी या पेरेंट बैंक आते हैं, द्वारा उपलब्ध कराई जाती हैं। समूहक, जमा शेष राशि, क्रॉस-फन्ड ट्रांसफर एवं प्रतिभूति कारोबार गतिविधियों जैसी सेवाएं उपलब्ध कराते हैं (एचकेएमए, 2010)।

विभिन्न देशों में खाता समूहकों द्वारा विविध प्रकार की सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं और यह इस ओर संकेत करता है कि स्वतंत्र रूप से खाता समूहन की वित्तीय व्यवहार्यता एक चुनौती बन सकती है। हालांकि, खाता समूहकों के विनियामकीय शासन तथा कारोबारी मॉडलों के उद्भव की प्रमुख चिंताएं उपभोक्ताओं से जुड़े वित्तीय आंकड़ों की सुरक्षा एवं निरापदता है। भारतीय बाजार की लागत के प्रति संवेदनशील होने के चलते खाता समूहकों द्वारा उनकी सेवाओं की वृद्धि का सारा दारोमदार उनके लिए लगाए जाने वाले शुल्क पर होगा। भारत में तेजी से बढ़ रही फिनटेक कंपनियों द्वारा खाता समूहकों को सहूलियत मिलने की संभावना है। आगे चलकर, खाता समूहकों से संबंधित विकसित हो रही अनुमत्य गतिविधियों की संभावना का पता लगाए जाने की जरूरत है, साथ ही वित्तीय आंकड़ों की सुरक्षा सुनिश्चित करना भी जरूरी है।

(जारी...)

**संदर्भ :**

एसआईसी (2001), " वित्तीय सेवाओं के क्षेत्र में खाता समूहन", परामर्श आलेख, 20, आस्ट्रेलियन सिक्यूरिटीज एन्ड इन्वेस्टमेंट कमिशन, मई।

सीएफपीबी (2017), " उपभोक्ता संरक्षण के सिद्धांत : उपभोक्ता द्वारा प्राधिकृत वित्तीय आंकड़ा साझा करना और समूहन", उपभोक्ता वित्तीय संरक्षण ब्यूरो, यूएस, अक्टूबर।

सीएमए (2016) 'रिटेल बैंकिंग मार्केट इन्वेस्टिगेशन : फाइनल रिपोर्ट कम्पटीशन एन्ट मार्केट्स अथॉरिटी, यू.के., अगस्ता

फुजी, एच., टी. ओकानो, एस. मैडनिक एवं एम. सीगेल (2002)। ' ई-समूहन : एशिया-प्रशांत क्षेत्र में ऑनलाइन वित्तीय सेवाओं का वर्तमान और भविष्य ', सीआईएसएल वर्किंग पेपर # 2002-06.

गेंट्जोग्लैनिंस, ए, सेविन, एवनर (2014), ' वित्तीय समूहन उद्योग जगत में धोखाधड़ी और निजता भंग होने का जोखिम : विनियमन का मुद्दा ' ' यूरोपियन साइंटिफिक जर्नल, खंड 2, सितंबर ।

एचकेएमए (2010) ' इंटरनेट बैंकिंग खाता समूहन सेवा पर जोखिम प्रबंधन नियंत्रण ', हांगकांग मौद्रिक प्राधिकरण, जुलाई।

**VII. समग्र आकलन**

VI.72 जमाकर्ताओं के हितों को संरक्षित करने और वित्तीय स्थिरता की सुरक्षा की दृष्टि से की गई विनियामकीय पहल के कारण एनबीएफसी की संख्या में गिरावट आई है। फिर भी, 2016-17 में ऋण वृद्धि अपेक्षाकृत अधिक दर्ज करने के साथ एनबीएफसी के तुलन-पत्र के समग्र आकार में विस्तार हुआ है, जबकि बैंक ऋणों में ऐतिहासिक निम्न वृद्धि दर्ज हुई। इससे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि सूक्ष्म और लघु खंडों को दिए जाने वाले ऋण – उद्योग और सेवा क्षेत्र दोनों, में मजबूत वृद्धि देखी गई। इन कंपनियों का वित्तीय निष्पादन लाभप्रदता में कमी और आस्ति गुणवत्ता में कमजोरी के कारण दबाव की स्थिति में रहा। सन 2016-17 के दौरान उनकी पूंजीगत स्थिति में भी कमजोरी आई, हालांकि यह स्थिति निर्धारित मानकों के स्तर से ऊपर विद्यमान रही। मार्च 2017 की स्थिति के अनुसार पूंजी बाजारों एवं स्थावर संपदा जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में एक्सपोजर उनकी कुल आस्तियों का 13.4 प्रतिशत रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में थोड़ा अधिक था। एनबीएफसी द्वारा जुटाई गई सार्वजनिक जमा राशियों में द्वि-अंकीय वृद्धि होने के बावजूद उनका स्तर बैंक जमा राशियों के 1 प्रतिशत से काफी कम रहा। एनबीएफसी ने संसाधन जुटाने के लिए बैंकों से लिए जाने वाले उधार पर निर्भरता कम करते हुए बाजार आधारित लिखतों का अपेक्षाकृत अधिक सहारा लिया। कुछ बड़े एनबीएफसी-एमएफआई को लघु वित्त बैंकों में परिवर्तित किए जाने का सूक्ष्म वित्तीयन खंड को दिए जाने वाले ऋण पर असर पड़ा।

VII.73 प्राथमिक व्यापारियों से वर्ष के दौरान लाभ में वृद्धि होने की रिपोर्ट प्राप्त हुई है। इस वृद्धि का कारण प्रतिलाभों

का अनुकूल होना और कारोबारी लाभों का अपेक्षाकृत अधिक होना रहा। भुगतान बैंकों के नुकसान में रहने की रिपोर्ट प्राप्त हुई, जिसका कारण प्रारंभिक अवस्थाओं में परिचालनगत लागत अधिक होना रहा। सन 2016-17 के दौरान एआईएफआई द्वारा मंजूर की गई वित्तीय सहायता में लगभग 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि आहरण किए जाने की वृद्धि 7.7 प्रतिशत रही, जो अपेक्षाकृत कमी को दर्शाती है। संभवतः यह कमी वर्ष के दौरान मांग परिस्थितियों के कमजोर हो जाने का संकेत है। नाबार्ड एवं राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी) ने काफी अधिक वित्तीय सहायता का आहरण करते हुए कृषि एवं आवास क्षेत्र को सहारा प्रदान किया।

VII.74 एनबीएफसी पर लागू होने वाले विनियमों को बैंकिंग विनियमों के संगत बनाए जाने के अधिकाधिक प्रयास किए जा रहे हैं और उनको विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। रिजर्व बैंक द्वारा दो तरह की नई एनबीएफसी – खाता समूहक और पीअर-टू-पीअर लेंडिंग प्लेटफॉर्म, के गठन के लिए हाल ही में जारी की गई अधिसूचना इसी प्रोत्साहन के तहत उठाए गए कदम को दर्शाता है। एनबीएफसी-एनडी द्वारा 30 जून 2018 तक अपनाए जाने से संबंधित समग्र सूचना प्रौद्योगिकी फ्रेमवर्क जारी किया जाना इस क्षेत्र की हाल ही की एक अन्य विनियामकीय गतिविधि रही।

VII.75 इस क्षेत्र से संबंधित विनियामकीय व्यवस्था के संदर्भ में, वित्तीय स्थिरता बोर्ड द्वारा समकक्षों से भारत की तुलनात्मक समीक्षा में पता चला कि क्षेत्र की जोखिम आकलन क्षमता में सुधार करने और उल्लेखनीय वित्तीय स्थिरता जोखिमों सहित आर्थिक विकास को सहारा प्रदान करने के लिए बाजार

आधारित वित्तीय एवं वित्तीय समावेशन को दिए जाने वाले बढ़ावे को संतुलित करना सुनिश्चित करने के लिए गैर-बैंकिंग वित्तीय प्रतिष्ठानों (एनबीएफई) के लिए समुचित नीतिगत उपाय विकसित करने तथा की जरूरत है। इस समीक्षा में यह सलाह भी निहित है कि रिज़र्व बैंक निम्नलिखित का पुनरावलोकन कर सकता है – एनबीएफसी के लिए कारोबारी मानकों का नियमित आधार पर निर्धारण करना, गैर-वित्तीय फर्मों की जमा स्वीकार करने संबंधी गतिविधियों के गुण-दोष की समीक्षा करना, सरकारी स्वामित्व वाली एनबीएफसी से संबंधित विनियामकीय छूट समाप्त करना, एनबीएफसी श्रेणी की संख्या को युक्ति संगत बनाना और एनबीएफसी के विवेक संबंधी नियमों को बैंकों के संगत बनाया जाना जारी रखना। एनबीएफसी से एकत्र किए गए

आंकड़ों की समयबद्धता और उनकी गहनता सूक्ष्मता में सुधार लाने और उनके विश्लेषण को मजबूत करने की भी जरूरत है।

VII.76 नवीनतम गतिविधियों से 2017-18 के पूर्वार्द्ध के दौरान एनबीएफसी ऋण में, विशेषरूप से खुदरा और सेवा क्षेत्र में, अच्छी वृद्धि का पता चलता है। वर्तमान वर्ष में सितंबर तक के दौरान वाणिज्यिक स्थावर संपदा को दिए जाने वाले ऋण में हुई उल्लेखनीय वृद्धि आर्थिक गतिविधि के लिए शुभ संकेत है। उपलब्ध आंकड़े भी हाल की तिमाही में एनबीएफसी की आस्ति गुणवत्ता में सुधार दर्शाते हैं, जो विमुद्रीकरण के धूमिल पड़ रहे प्रभाव की ओर संकेत करते हैं। हालांकि, आगे चल कर वस्तु और सेवा करों से संबंधित समायोजन पर नज़र रखने की जरूरत है।